नारी को रमणी न मानें जननी का सम्मान दें

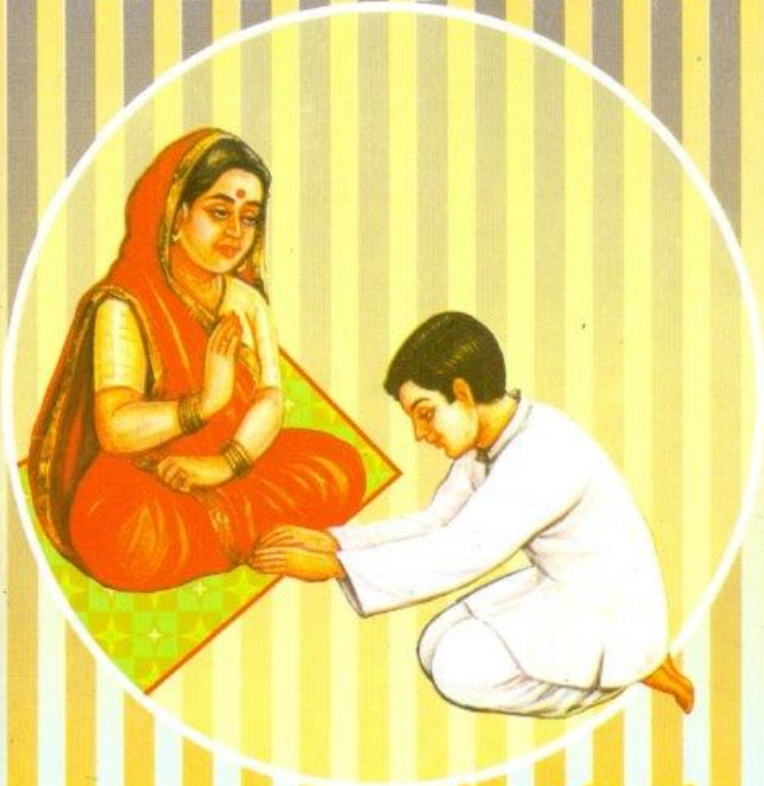

– श्रीराम शर्मा आचार्य

नारी को रमणी न मानें जननी का सम्मान दें

लेखक

– पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक :

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९

फैक्स नं०– २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०१३ **मूल्य : १२.०० रुपये**

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

मुद्रक :
युग निर्माण योजना प्रेस,
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नारी को न्याय मिले

नारी को शक्ति रूप कहा गया है । पुरुष अपने शौर्य, पराक्रम और साहस का ढिंढोरा चारों ओर पीटता रहता है । ये विशेषताएं उसे कहां से प्राप्त हुईं ? गंभीरता से विचार किया जाए तो मूलतः श्रेय नारी सत्ता को ही जाता है । काया से लेकर मन मस्तिष्क का आरंभिक ढांचा तो मातृशक्ति ही अपने गर्भ में रखकर तैयार करती है । पय पान द्वारा शरीर के पोषण के साथ साथ स्नेह, प्यार, वात्सल्य के अभिसिंचन द्वारा वह मन एवं भाव संस्थान को हृष्ट एवं पुष्ट करती है । शरीर पोषण के अतिरिक्त यह अमूल्य अनुदान बालक को सतत् मिलता रहता है । विश्व के मूर्धन्य मनः शास्त्रियों का निष्कर्ष है कि पांच वर्ष की आयु तक बच्चे का नब्बे प्रतिशत निर्माण हो जाता है । दस प्रतिशत का तो बाद में विकास होता है । उन गुणों का विकास जिनका बीजारोपण बालक में मां कर चुकी होती है, दस प्रतिशत के ही अंतर्गत बालक का स्वयं का पुरुषार्थ तथा वातावरण का योगदान आता है । अर्थात् पुरुष जैसा भी कुछ बनता है उसमें मातृशक्ति के सहयोग का हिस्सा नब्बे प्रतिशत होता है ।

होना यह था कि नारी के अजस्र अनुदानों के प्रति पुरुष कृतज्ञता व्यक्त करता और उस प्राचीन परंपरा को कायम रखता जिसमें नारी को शक्तिस्वरूपा मानकर उसके प्रति असीम श्रद्धा व्यक्त की गई है । उसकी श्रेष्ठता वरिष्ठता के प्रति हर व्यक्ति नत मस्तक होता है, पर दुर्भाग्य है कि ऐसा न हो सका । पुरुष कृतघ्न निकला । उसकी कृतघ्नता बढ़ती ही गई । नारी से मातृशक्ति के रूप में जिसे असंख्यों प्रकार की सुविधाएं मिलीं, उसे ही पुरुष ने दूसरी श्रेणी का कनिष्ठ प्राणी मान लिया । मानवी प्रगति के इतिहास में वह दिन सबसे दुर्भाग्य का है जब नर नारी के बीच एक को वरिष्ठ तथा दूसरे को कनिष्ठ मानने के भेदभाव की परंपरा आरंभ हुई । भारतीय संस्कृति के इतिहास में यह कलंक का ऐसा पृष्ठ जुड़ा जिसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पढ़ने पर सिर लज्जा से झुक जाता है ।

तब से नारी की स्थिति दिन प्रतिदिन गिरती ही गई । भोग्या, अबला, कामिनी, माया जैसी कितनी ही असम्मान सूचक उपाधियां उसे दी गईं । कितनो ने तो नर को वरिष्ठ नारी को कनिष्ठ सिद्ध करने के लिए धर्मतंत्र के मनोवैज्ञानिक हथियारों का प्रयोग किया । कहा यह जाने लगा कि पिण्डदान लड़के के बिना संभव नहीं है । यह अधिकार लड़की को नहीं है । धर्म परायण देश होने के कारण इस भ्रांति ने अपनी जड़ें गहरी जमा लीं कि पुत्र के बिना उसके द्वारा पिण्डदान कृत्य संपन्न किए बिना, मृतक पिता को शांति नहीं मिल सकती । वह स्वर्ग, मोक्ष का अधिकारी नहीं बन सकता । रौरव नरक की यंत्रणा भुगतने जैसे कितने ही काल्पनिक भय दिखाएं गए । समझ में नहीं आता कि जिस धर्म ने नारी सत्ता को इतना अधिक सम्मान दिया, उसके विभिन्न रूपों की पूजा अभ्यर्थना की है, वही कालान्तर में नारी के प्रति अनुदार और निष्ठुर कैसे बन गया ? निस्संदेह तथाकथित विद्वानों की यह एक खुली साजिश थी जो नारी शक्ति को गिराने के लिए धर्मतंत्र का दुरुपयोग करने तक पर उतारू हो गए । शास्त्र के नाम पर कुछ ऐसे पृष्ठ तक बनाए गए तथा श्लोक जोड़ दिए गए जो नारी की छवि को धूमिल करते हैं ।

समाज में बहुतायत उन व्यक्तियों की होती है जिनका स्वयं का अपना कोई मौलिक चिंतन नहीं होता । भीड़ जिस प्रवाह में बहती है उसी में वे डूबते उतराते बहते देखे जाते हैं । शास्त्र के नाम पर अथवा परंपरा के नाम पर जो भी चिंतन थोपा गया, आंख मूंद कर पीढ़ी दर पीढ़ी यह वर्ग अपनाता चला गया । एक बार नारी को पुरुष की तुलना में हेय मानने की जो प्रथा आरंभ हुई, वह क्रमशः पोषण पाकर सुदृढ़ होती रही । स्थिति आज यह है कि थोड़े से विचारशीलों को छोड़कर समाज के अधिकांश व्यक्ति नारी की अपेक्षा पुरुष को वरिष्ठ और श्रेष्ठ मानते हैं । इसका प्रत्यक्ष प्रमाण उस समय मिलता है जब लड़के का जन्म होने पर खुशियां मनाई जातीं और लड़की पैदा होने पर शोक व्यक्त किया जाता है । लड़का लड़की को समान मानने वालों की अपेक्षा उनका अनुपात कई गुना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अधिक है जो लड़के के लिए तो लालायित रहते हैं, पर लड़की के जन्म को अभिशाप मानते हैं । नर नारी की समानता का नारा देने वाले प्रबुद्धों में भी जब यह प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है तो सहज विश्वास करना पड़ता है कि भेदभाव की मान्यताएं कितनी अधिक गहराई तक जड़ जमाए हुए हैं ।

भेदभाव की यह मनोवृत्ति कितनी घातक, कितनी निष्ठुर और नृशंस हो सकती है, इस तथ्य की ओर प्रायः ध्यान कम व्यक्तियों का जाता है । आए दिन समाचार पत्रों में खबर छपती है कि पुत्र प्राप्ति के लिए बलि दी गई । देवी देवता से पुत्र की उपलब्धि के लिए मनुष्य इतना अधिक अंध-विश्वासी हो सकता है कि किसी दूसरे की बलि तक दे सकता है, ऐसे समाचार प्रायः पढ़ने को मिलते रहते हैं । राजस्थान के जैसलमेर और बाड़मेर जिले के गांवों में दीर्घकाल तक यह प्रथा विद्यमान थी कि पुत्री होने पर वहां के राजपूत उसे मार डालते थे । कुछ गांवों तक में तो पिछले कुछ वर्षों तक एक भी बारात नहीं आई, किसी लड़की का विवाह होते नहीं देखा गया । जन जागृति आने पर यह अमानवीय प्रथा खुले तौर पर तो बंद हो गई पर विशेषज्ञों का अनुमान है कि बाड़मेर के कुछ गांवों मे लुके-छिपे तौर पर आज भी यह कुप्रथा मौजूद है । भाटी राजपूत नवजात लड़कियों को उनके जन्म लेते ही मार देते हैं ।

दहेज प्रथा को लेकर आज कल सर्वत्र आक्रोश भरे विरोध के स्वर प्रस्फुटित हो रहे हैं । पत्र पत्रिकाओं में उत्तेजक लेख निकलते हैं । उन्मूलन के लिए वैचारिक गोष्ठियां आयोजित होती हैं । कितने ही स्थानों पर विरोधी संगठन तक बनाए गए हैं, ताकि समय पर वे दहेज प्रथा की समाप्ति के लिए संघर्ष कर सकें, पर अनेकानेक प्रयासों के बावजूद भी यह प्रथा सुरसा के मुंह की तरह बढ़ती जा रही है । दहेज के कारण मरने वाली नव वधुओं की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है । प्रकाशित सरकारी आँकड़ों के अनुसार वर्ष १९८० में ४६० महिलाएं जलकर मरीं तथा १९८१ में ६०० से भी ऊपर पहुचं चुकी है । अनुमान है कि सरकारी इन प्रकाशित आँकड़ों की तुलना में अप्रकाशित घटनाओं की संख्या कहीं अधिक है । जिनकी या तो सूचना नहीं मिल पाती अथवा पुलिस उन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

घटनाओं का सुराग नहीं प्राप्त कर पाती । अधिकृत आंकड़ों के अनुसार देश में महिलाओं की संख्या में निरंतर ह्रास होता जा रहा है । कारण दहेज के कारण मार डालना बताया जाता है । यह स्थूल समीक्षा है, पर कारणों की गहराई से खोजबीन करें तो मालूम होगा कि दहेज प्रथा की जड़ें भी उस परंपरा में मौजूद है जिसमें कि लड़के लड़की के बीच भेदभाव बरता जाता है ।

स्वेच्छापूर्वक कन्यादान के समय कुछ भौतिक वस्तुओं का, पिता द्वारा दिया जाना एक बात है, पर अधिकार के रूप में जो मोटी रकम दहेज के रूप में मांगी जाती है उसके पीछे वह अहमण्यता ही झांकती दिखायी देती है जिसके कारण पुरुष अपने को वरिष्ठ मानता रहता है । उस वरिष्ठता की कीमत भी लड़की के पिता से वसूलने की कोशिश करता है । मांग पूरी न होने पर लड़की को मारने पीटने प्रताड़ित करने से लेकर जलाने तक के नृशंस उपाय काम में लाए जाते हैं । अस्तु जब कभी भी दहेज प्रथा के उन्मूलन के लिए गंभीरता से विचार किया जाएगा तो इस निष्कर्ष को समझे बिना उसमें सफलता नहीं मिल सकेगी कि दहेज प्रथा की जड़ें नर नारी के बीच बरती जाने वाली भेदभाव की दुष्प्रवृत्ति में जमी हुई हैं । जिसे मिटाए बिना दहेज प्रथा की समाप्ति संभव नहीं है ।

विडंबना तो यह है कि इस प्रवृत्ति को प्रश्रय देने के लिए विज्ञान के नवीनतम आविष्कारों तक का दुरुपयोग किया जाने लगा है । नयी वैज्ञानिक तकनीक के अनुसार गर्भ में पल रहे भ्रूण के लिंग की जानकारी जन्म से पूर्व ही प्राप्त की जा सकती है । एम्नियो सेण्टेसिस की नयी पद्धति द्वारा गर्भ में स्थित भ्रूण के चारों ओर भरे तरल एक्नियाटिक फ्लूड की स्वल्प मात्रा सिरिंज से खींच ली जाती है, जिससे उसमें पाए जाने वाले भ्रूणों का अध्ययन विशिष्ट तरीके से किया जा सके । अध्ययन के दौरान भ्रूण के संबंध में चिकित्सकों को कितनी ही ऐसी बातें मालूम हो जाती हैं जो प्रायः शिशु जन्म के बाद ज्ञात हो पाती हैं । यह परीक्षण सोलह से लेकर बीस सप्ताह के गर्भ काल के दौरान होता है । इस तकनीकि का विकास मूलतः यह जानने के लिए किया गया था कि गर्भस्थ शिशु कहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विकलांग तो नहीं है ताकि गर्भपात द्वारा एक जन्मजात विकलांग बच्चे के जन्म को रोका जा सके । इस तकनीक में भ्रूण के क्रोमोसोम का पूरा अध्ययन संभव है । इसलिए यह भी बताया जा सकता है कि होने वाली संतान लड़का होगा अथवा लड़की । इस खोज का कुछ अनैतिक व्यक्तियों ने दुरुपयोग करना आरंभ कर दिया है ।

पैसे के लिए कितने ही लोभी चिकित्सकों ने भ्रूण के लिंग बताने का नया व्यवसाय आरम्भ किया है । हाल में यह रहस्योद्घाटन हुआ है कि यह व्यापार कितने ही प्राइवेट नर्सिंग होमों में धड़ल्ले से चल रहा है । यह सब लुकछिप कर चलता है । राजस्थान,गुजरात, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, पंजाब, दिल्ली आदि प्रांतों में सैकड़ों केन्द्रों का सुराग मिलता है जहां इस तरह का अमानवीय व्यवसाय चलता है । इन केन्द्रों पर पुत्र लालसा से पहुंचने वाले व्यक्तियों की संख्या अधिकाधिक पायी गयी है । यह मालूम होने पर गर्भस्थ शिशु कन्या है, अभिभावक गर्भ गिरवा देते हैं । एक मोटी रकम चिकित्सक को मिलती है तथा अभिभावकों को कन्या भार से छुट्टी मिलती है ।

पर मूर्धन्य चिकित्सा शास्त्रियों का मत है कि यह प्राकृतिक विधि अत्यंत जोखिम से भरी हुई है। एम्नियो सेन्टेसिस करने की प्रक्रिया में गर्भ की परतों को छेदना पड़ता है,एक्नियाटिक तरल पदार्थ तभी निकल सकता है । कई बार चोट से गर्भपात हो जाता है । चिकित्सक यह कह कर छुट्टी पा लेते हैं कि भ्रूण कन्या थी जब कि उनमें से कितने ही लड़के होते हैं जो जन्मने के पहले ही दम तोड़ देते हैं। मुम्बई की एक घटना प्रकाश में आई है कि एक महिला को इस परीक्षण के बाद चिकित्सक ने बताया कि उसे लड़का होने वाला है किन्तु जब प्रसव हुआ तो देखा गया कि वह लड़का नहीं लड़की है । सम्भवतः प्रकृति को भी मनुष्य की यह भेदभाव की प्रवृत्ति उचित न लगी । कुपित होकर उसने लड़की के साथ विकलांगता का अतिरिक्त अभिशाप जोड़ दिया ।

इण्डियन मेडिकल एसोसिएशन के प्रेसीडेण्ट डा. एफ. एस. देसाई का कहना है कि लिंग निर्धारण के लिए गर्भाशय को छेदकर सुई से द्रव

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पदार्थ निकालना आवश्यक है, पर देखा गया है इसमें कितनी ही बार वह छोटा छेद विकराल रूप ले लेता तथा गर्भपात तक हो जाता है । यह प्रक्रिया निरापद नहीं है । किसी भी हालत में इसे प्रोत्साहन नहीं मिलना चाहिए ।

मनुष्यता के अनुबंध यह कहते हैं कि किसी पुरुष को बिना कोई कीमत चुकाए यदि आजीवन सेवा के लिए पत्नी मिलती है तो उसे न केवल उस महिला का वरन् उसके समूचे परिवार का भी आजीवन कृतज्ञ रहना चाहिए । बिना वेतन के दिन रात सेवा करने वाले सेवक किसी को कहां मिल सकते हैं । यह उदार सेवा साधना तो मात्र नारी से ही बन पड़ती है कि वह अपने घर परिवार को छोड़कर दूसरों के यहां रहे और मात्र रोटी कपड़े पर दिन रात आजीवन सेवा साधना में रत रहे । इस प्रकार सहज ही अपना पितृ गृह छोड़कर अन्यत्र जाने को सहमत किसी नारी के प्रति ससुराल के प्रत्येक सदस्य को कृतज्ञ होना चाहिए । उपकार का बदला न चुका सकने पर भी निरंतर ऐसा अनुभव करते रहना चाहिए कि उन्हें बहुमूल्य उपकार अनुदान प्राप्त करने का सौभाग्य मिला है ।

किंतु हिन्दू समाज में होता ठीक इससे उलटा है । वधू से यह आशा की जाती है कि वह अपने साथ पिता के घर का सारा माल असबाब भी ढोकर लाएगी । भले ही इसे जुटाने में उस परिवार को दर–दर भिखारी क्यों न बनना पड़े । मांग–जांच तक बात सीमित रहे तो भी एक बात है किंतु होता यह है कि एक बड़ी राशि मिलने को अधिकार माना जाता है और न मिलने पर ससुराल वालों से तो प्रत्यक्ष लड़ना–झगड़ना बन नहीं पड़ता, उस निरीह लड़की को त्रास देना आरंभ किया जाता है जो उस घर में पराश्रित होकर रह रही है और सताए जाने पर खुलकर न तो उसे प्रकट कर सकती है और न प्रतिरोध करने की स्थिति में होती है । यह सताने का कृत्य इसलिए होता है कि वह अपने अभिभावकों से अपना कष्ट कहे और उसके निवारण के लिए कहीं से भी, किसी प्रकार भी जो राशि मांगी जा रही है उसे चुकाने का प्रबंध कराए ।

अभीष्ट धन देने की बहुत बार तो वधू के माता पिता की स्थिति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सचमुच ही नहीं होती । कई बार होती भी है तो वे सोचते हैं कि इतना धन विवाह में लगा दिया गया, अपना भी तो काम चलाना है, अपने को भी तो जीवित रहना है–फिर उचित कारण हो तो एक बात भी है । सुयोग्य कन्या सदा के लिए सेविका के रूप में दे चुकने और साथ ही विवाह में सामर्थ्य भर पैसा लगा देने के उपरांत भी इस तरह की मांग को एक प्रकार से डकैती, राहजनी जैसा ही माना जाएगा । किसी अनुचित मांग के आगे सिर झुकाने के लिए भी किसी स्वाभिमानी और न्यायप्रिय आदमी का मन नहीं करता ।

इस खींचतान का दबाव उस निरीह बालिका पर पड़ता है जो अपना घर छोड़कर बड़ी–बड़ी आशाएं और उमंगें लेकर ससुराल गई है । जहां तक संभव होता है वह ताने प्रताड़ना सहती और खून के घूंट पीती रहती है । बहुत बार तो इसी प्रकार तिरस्कृत, प्रताड़ित स्थिति में दिन गुजरने से काम चल जाता है पर अनेक अवसरों पर ऐसी असह्य स्थिति आ बनती है जिसमें या तो वधू को आत्महत्या करके आए दिन की प्रताड़ना से छुटकारा पाना पड़े या फिर ससुराल वाले ही उस असहाय के प्राण हरण कर लेते हैं । इसमें उन्हें एक दूसरा लाभ यह भी दीखता है कि वधू के मर जाने पर लड़के का दूसरा विवाह हो जाएगा और फिर पिछले विवाह की तरह और भी नया दहेज मिलेगा । इस प्रकार एक ही ढेले से दो शिकार होते हैं । मांग पूरी न होने पर अपहरण करने वाले डाकुओं की तरह हत्या कर देना और प्रतिशोध ठण्डा करना, दूसरा नया विवाह होने पर अधिक धनराशि के मिलने पर दूना लाभ उठाना ।

यही कारण है कि नव वधुओं की हत्याएं तथा आत्म हत्याएं निरंतर बढ़ती जा रही हैं । पैशाचिकता के नग्न नृत्य की यह विभीषिका इतनी भयावह है जिस पर न केवल उत्पीड़न सहन करने वालों को वरन् समूचे विज्ञ समुदाय को विचार करना चाहिए ।

इस संदर्भ में समाचार पत्रों में प्रकाशित सन् १९८० की कुछ घटनाएं इस प्रकार हैं–औरंगाबाद के मारवाड़ क्षेत्र में सामाजिक कार्यकर्त्ताओं ने एक सर्वेक्षण में पाया कि ग्रीष्मकाल के संपन्न ८० प्रतिशत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विवाहों में दुल्हनों को दहेज के रूप में तीस हजार से पचास हजार रुपए तक की राशि अपने दूल्हों के घर ले जानी पड़ी ।

सर्वेक्षण के अनुसार देहाती इलाकों में दहेज की राशि ३००० से २५००० रुपए तक है । शहरी क्षेत्रों में ६००० रुपए से ५० हजार रुपए तक है । इंजीनियर, वकील, डाक्टर का न्यूनतम मूल्य २५ हजार है । फर्रुखाबाद से ५० किलोमीटर दूर सारिख थाने में एक व्यक्ति ने लिखाया कि उसकी बहन की शादी शेरपुर निवासी श्रवणकुमार के साथ छः वर्ष पहले हुई थी । इस बीच कोई बच्चा उत्पन्न न होने के कारण पति तथा परिवार वाले उसे प्रताड़ित कर रहे थे । सूचना के अनुसार काण्ड वाले दिन उसकी बहन को पति तथा ससुराल वालों ने मारपीट कर कमरे में बंद कर दिया फिर उसके शरीर पर मिट्टी का तेल छिड़क कर आग लगा दी जिससे वह मर गई ।

परीक्षित गढ़ में ब्याही कुसुम नामक वधू के पिता ने विवाह में ५० हजार खर्च किया तो भी ससुराल वालों की उतने में संतुष्टि न हुई । उनकी नई मांग बढ़ी और पूरी न होने पर लड़की की प्रताड़ना आरंभ कर दी तथा अंततः उसकी जान ले ली गई । मेरठ के प्यारे लाल शर्मा अस्पताल में कुसुम ने मजिस्ट्रेट के सामने कराहते हुए कहा—आज सुबह मुझे मेरी सास ने ऊपर मंजिल से चाय बनाकर लाने को कहा । मेरे रसोई में पहुंचते ही परिवार वाले पहुंच गए । मेरे मुंह में कपड़ा ठूंस कर, हाथ—पांव बांध दिए, सब गहने उतारकर मिट्टी का तेल छिड़क कर आग लगा दी । जलने के समय मेरे मुंह से कपड़ा निकल गया । मैंने बचाओ ! बचाओ ! चिल्लाया । पड़ौसी लोग आ गए । तब परिवार वाले मुझे निकालकर आग बुझाने लगे, १७ जून १९८० को गर्भवती कुसुम विदा हो गई । भाई की सूचना पर पुलिस ने सास—ससुर को पकड़ लिया, अन्य लोग फरार हो गए ।

इण्डियन एक्सप्रेस में छपे समाचार के अनुसार दिल्ली नगर में ही ऐसी घटनाएं आए दिन होती रहती हैं जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं—

भारती की शादी चार महीने पूर्व हुई थी । किंतु जब से वह सुसराल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आयी, दहेज के कारण तरह–तरह की यातनाएं सहनी पड़तीं, उसके साथ अमानवीय बर्ताव किए जाते और समय–समय पर पीटी भी जाती । इन कुकृत्यों का उत्कर्ष गुलमोहर पार्क स्थित ससुराल में उसे जिन्दा जलाकर किया गया ।

गर्भवती ऊषा रानी ने अपने ससुराल वालों से तंग आकर आत्महत्या कर ली । बताया जाता है कि इसके पीछे दहेज ही प्रमुख कारण था । ऊषा के मां बाप दहेज में पर्याप्त धन नहीं दे पाए, जिसके कारण उसे अपने सास व पति का कोप भाजन बनना पड़ता । अंततः उसने ८ जून को इस सबसे ऊबकर खुदकशी कर ली ।

पंजाबी बाग मुहल्ले में प्रेमलता नामक महिला भी इसी कुप्रथा का शिकार हुई । ३० मई की रात्रि को उसके पति और देवर ने उसे जलाकर मार डाला ।

कुसुम को भी इसी क्रूर प्रथा ने उदरस्थ कर लिया । दहेज की प्यासी उसकी सास ने मिट्टी का तेल छिड़क कर उसे मार दिया ।

मोर सराय, चांदनी चौक की २० वर्षीया कान्ता को उसके पति ने छुरा से कतर कतर कर २३ अप्रैल को मार डाला । बताया जाता है कि उसके बेरोजगार पति की टी. वी. और रेफ्रीजरेटर की मांग थी । चूंकि उसके ससुराल वाले उसकी मांग पूरी करने में असमर्थ थे, अतः उसने इसका प्रतिकार कान्ता की मौत के रूप में किया ।

सहारनपुर निवासी ३५ वर्षीय रामा माहेश्वरी को भी इसी कुचक्र में पड़ कर प्राण गंवाने पड़े । उसके देवर, ससुर और सास ने इस कुकृत्य में हिस्सा लिया । हत्या के बाद शव को दिल्ली रेल्वे स्टेशन पर बिस्तर बंद में लपेट कर छोड़ दिया गया ।

गीता मलिक, जो स्थानीय बाल भारती स्कूल में शिक्षिका थी और तीन बच्चों की मां थी, इसी क्रूर प्रथा ने उसकी ७ जून, ८२ को जान ले ली ।

दक्षिणपुरी दिल्ली में एक नव विवाहिता मीना को रात को एक बजे के लगभग उसके पति डोरीलाल ने बंद झोंपड़ी में मिट्टी का तेल छिड़क

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर जला डाला । इसके कुछ घण्टों के बाद उसकी सफदरजंग अस्पताल में मृत्यु हो गई ।

मरने से पूर्व न्यायाधीश और पुलिस को मीना ने बताया कि उसके विवाह को अभी एक वर्ष ही हुआ है और तभी से उसका पति और सास उसे अपने मायके से और अधिक दहेज लाने के लिए सताया करते थे ।

एक लोहे के व्यापारी और दो अन्य लोगों को उस समय गिरफ्तार किया गया जब वे व्यापारी की पत्नी की जली हुई लाश को कार में डालकर ले जाने का प्रयत्न कर रहे थे । दूसरी घटना के अनुसार अपनी मृत्यु से पूर्व एक २० वर्षीय लड़की ने अधिकारियों को बताया कि उसकी सास ने उस पर मिट्टी का तेल डालकर जला दिया है । इस प्रकार अनेक घटनाएं प्रतिदिन होती रहती हैं । इनमें कई दहेज के कारण की जाने वाली हत्याओं को आत्महत्या कहकर उनका रूप बदल दिया जाता है ।

अमृतसर में एक गर्भवती विवाहिता को उसके ससुराल वालों ने आग लगाकर मार डाला । पड़ोसियों ने उसकी चीखें सुनीं, किंतु घर वालों ने एक पारिवारिक घटना कहकर किसी को अन्दर आने नहीं दिया । इस घटना के दो दिन पश्चात् उसके ससुराल वालों को पकड़ा गया ।

राजधानी दिल्ली में दहेज से संबंधित अपराधों में बड़ी भयानक वृद्धि हुई है । वहां अनेक वीभत्स कांड हुए हैं, जिनके बारे में निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि ये हत्याएं दहेज के कारण की गई हैं । इन हत्याओं में कुछ तो अत्यंत ही आश्चर्यजनक नृशंस रूप से हुई हैं ।

एक घटना के अनुसार जली हुई मृत महिला के पास माचिस व कुछ बोतलें रखी हुई पायी गयीं । उसके पति का अभी तक कोई सुराग नहीं मिला है । एक अन्य संवाद के अनुसार एक किशोरी को उसका पति उस्तरे से उसके प्राणांत होने तक चीरता ही रहा । ऐसी ही कई अन्य घटनाएं प्रकाश में आई हैं जिनके अनुसार जहर द्वारा अथवा जलाकर मारने के कुछ असफल प्रयास भी किए गए हैं ।

इण्डियन एक्सप्रेस में छपे एक समाचार के अनुसार फिरोजपुर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जनपद में जमैतावाला गांव की एक नवविवाहिता को गला दबाकर मार डाला गया । उसकी शादी को कुल चार महीने हुए थे । बताया जाता है कि इस हत्या के पीछे दहेज प्रमुख कारण था । लड़के द्वारा की गई मोटर साइकिल की मांग लड़की के मां बाप पूरा करने में असमर्थ थे, जिसकी प्रतिक्रिया स्वरूप लड़के ने अपनी पत्नी की हत्या कर डाली ।

आए दिन इस प्रकार की अनेकानेक घटनाएं घटती रहती हैं । समाज कल्याण मंत्रालय की ओर से किए गए एक सर्वेक्षण में पाया गया है कि ६० प्रतिशत विवाहित युवक शादी को बाजारू सौदा मानते हैं । उनकी यह भी अवधारणा है कि विवाह सूत्र में बंधने की यह सौदेबाजी समाज द्वारा अनुमोदित है ।

कोटा के एक गरीब परिवार में पली लड़की प्रमिला रानी की शादी बड़ौदा में हुई । दहेज के लालची ससुराल वालों ने लड़की को मारपीट कर कूड़े के एक ढेर में जा पटका और आग लगा दी । कुछ देर बाद बेहोशी की स्थिति में प्रमिला को किसी प्रकार निकाल भी लिया लेकिन हत्यारों ने श्मशान घाट पर जाकर उसका दाह– संस्कार डीजल छिड़क कर किया । हत्या के समय लड़की ८ माह की गर्भवती थी ।

नवभारत टाइम्स में प्रकाशित समाचार के अनुसार अलवर जिले के सुरेर नामक ग्राम में परिवार वालों ने नव विवाहित सोमोती नामक युवती की हत्या इसलिए कर दी कि वह दहेज में पर्याप्त धन नहीं लाई थी । हत्या करने वालों में उसका पति एवं सास–ससुर सम्मिलित थे ।

दिल्ली में हरजीत कौर नामक २१ वर्षीय नव वधू को दहेज की लालची उसकी ६० वर्षीय ददिया सास ने मिट्टी का तेल छिड़क कर जिन्दा ही जला दिया । बाद में दोनों को पुलिस पकड़ कर ले गई और अब वे आजीवन कारावास की सजा भुगत रही हैं । मृतका की गोद में १० मास का एक नन्हा मासूम बच्चा भी था ।

रश्मि नामक एक २३ वर्षीय युवती को जली हुई स्थिति में दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल में भर्ती किया गया जहां तीन दिन बाद उसने अपना दम तोड़ दिया ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रश्मि के पिता ने पुलिस में रिपोर्ट की कि उसके दामाद राकेश ने, जिससे उसने छः वर्ष पूर्व अपनी बेटी का विवाह किया था, अपने साले की शादी से पूर्व एक स्कूटर की मांग की थी । ससुराल वालों के लिए तो रश्मि गेहूं भी अपने मायके से लाती ही थी । लोगों का कहना है कि राकेशकुमार गुप्ता अपनी पत्नी को बहुत मारता पीटता था । पिता से रश्मि ने मरते समय कहा बताते हैं कि मेरे दोनों बच्चों को इस घर से ले जाना वरना ये उन्हें भी नहीं छोड़ेंगे ।

हलद्वानी के प्रोफेसर की पत्नी शकुन्तला श्रीवास्तव जब दहेज की मांग और मानसिक यंत्रणाओं से तंग आ गई तब अपनी सास की प्रेरणा के अनुसार उसने आत्महत्या कर ली । इस कथित अपराध में उसकी सास को गिरफ्तार करके जेल भेज दिया गया ।

जली हुई अवस्था में नागरिक अस्पताल में भरती शकुन्तला ने मजिस्ट्रेट को दिए अपने बयान में दहेज के लिए सास एवं अन्य ससुराल वालों की ओर से तंग किए जाने का जिक्र किया था । इसके कुछ घण्टों बाद उसकी वहीं मृत्यु हो गयी ।

वह कुल मिलाकर एक माह से ज्यादा ससुराल में नहीं रह सकी थी । पति की ओर से तलाक और उसकी ओर से भरण पोषण के दावों की वापसी पर एक लिखित समझौते के अंतर्गत १५ दिन पहले ही उसे ससुराल वाले अपने घर लाए थे ।

जवाहर नगर (कानपुर) में एक २२ वर्षीय श्रीमती रानी को मृत्यु के मुख में इसलिए जाना पड़ा कि उसके पिता जीत बहादुर विवाह में दहेज नहीं दे सके । रानी के पिता ने पुलिस के समक्ष अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि मेरी बेटी को निर्ममता के साथ पीटा । रात को सोती हुई रानी के गुप्तांगों में जलती हुई कलछी लगाई गई । जब उसने शोर किया तो मुंह में कपड़े ठूंस दिए और गला घोंटकर मार डाला ।

दहेज की बकाया रकम न मिलने पर मनोरमा नामक १८ वर्षीय इन्दौर की लड़की को उसकी सास ने रात को सोते समय मिट्टी का तेल छिड़क कर जिन्दा जला दिया । घटना ११ जुलाई १९८० की है । पुलिस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सूत्रों से पता चला है कि लड़की के बयान के अनुसार ५०० रुपए की धन राशि उसके घर वालों को चुकाना बाकी था । पिता द्वारा उसे न चुकाए जा सकने के कारण उसे प्राण गंवाने पड़े ।

प्रत्येक भावनाशील और मनुष्यता का दायित्व समझने वाले विचारवान को इस बढ़ती पैशाचिकता पर अधिक गंभीरतापूर्वक विचार करना होगा और आक्रोश की चर्चा का विषय मात्र न रहने देकर कुछ ऐसा उपाय करना होगा जिससे इस कलंक से सदा सर्वदा के लिए पीछा छूट सके ।

नारी विकास हेतु ठोस कदम उठें

जिस घर, समाज या देश ने नारियों को सम्मान दिया है वहां देवताओं ने वास किया है और वही उन्नति के पथ में अग्रसर रहे हैं । प्राचीन काल में नारियां योग्य एवं कर्तव्यशील होती थीं जो देश की सेवा के लिए समझदार, स्वस्थ और साहसी बच्चे को जन्म देती थीं । आज उन्हीं का यश देश में गूंज रहा है । धन्य हैं, वे माताएं जिनके वीर सपूतों ने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए सीनों पर गोलियां खाईं, बलिदान हुए और हंसते हंसते प्राण दिए और रणक्षेत्र में कभी पीठ नहीं दिखाई, यह श्रेय उनकी वीर एवं विदुषी माताओं को ही है ।

वैदिक और उपनिषद काल में यहां की नारियां विद्या, कला, अध्यात्म, शूर वीरता आदि गुणों में बढ़ी चढ़ी थीं और उनके प्रभाव से उनकी संतान भी संसार में महान कार्य करके दिखलाने में समर्थ होती थीं, जिनके ज्वलंत उदाहरण राम, कृष्ण, परशुराम, विश्वामित्र आदि हैं ।

मध्यकाल में उनको ऐसे बंधनों से जकड़ा कि वे योग्यता शून्य हो केवल घरेलू काम काज तथा संतानोत्पादन तक ही सीमित रह गईं । परिणामस्वरूप सारी कुरीतियों का कारण यही युग कहा गया । बाल विवाह, पढ़ना लिखना अनावश्यक और पर्दा प्रथा का चलन प्रारंभ हो गया जो आज तक घेरे है । परिणाम स्वरूप अवनति और पतन ही होता रहा ।

आधुनिक काल में कुछ शिक्षित लोगों ने स्त्रियों को सुशिक्षित,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शारीरिक और मानसिक दृष्टि से योग्य बनाना, सार्वजनिक क्षेत्र में कोई महत्वपूर्ण कार्य कर सकने का अवसर देना आवश्यक माना है । यदि कोई स्त्री अपनी लगन और परिश्रम से उन्नति करके बड़े कामों में भाग लेने लग जावे तो उसे अच्छी निगाह से नहीं देखते और दोष खोजने की चेष्टा में रहते हैं । यह मनोवृत्ति देश और समाज की प्रगति के लिए घातक है, किंतु हमें भारतीय संस्कृति के अनुकूल नारी सुलभ गुणों की रक्षा करते हुए उनको ज्ञान–विज्ञान कला आदि से विभूषित करने का प्रयास अनिवार्य है, ताकि वे आवश्यकता पड़ने पर सामाजिक व्यवस्था के कार्यों को ठीक ढंग से चला सकें ।

कर्तव्य और अधिकार की दृष्टि से स्त्री पुरुष की साझेदारी है । प्राचीन काल में यह नियम था कि कोई भी यज्ञ, हवन या धार्मिक काम बिना पत्नी के सहयोग के नहीं किया जा सकता था । अनेक स्त्रियां तो ज्ञान और भक्ति की दृष्टि से आगे बढ़कर पुरुषों का मार्गदर्शन करती थीं, बड़े–बड़े पंडितों तथा ऋषियों से शास्त्रार्थ करती थीं । आवश्यकता पड़ने पर वे देश रक्षा और समाज संचालन के कार्यों में नेतृत्व भी करती थीं । अर्द्धांगिनी को सहधर्मिणी कहकर संबोधित किया जाता था, इस प्रकार नारी और पुरुष मिलकर एक इकाई बनते हैं क्योंकि दोनों आधे–आधे हैं । सहधर्मिणी के रूप में नारी का यह कर्तव्य एवं अधिकार आवश्यक हो जाता है कि धर्म मर्यादा का पालन स्वयं करे और पुरुषों से भी कराए ।

वर्तमान युग में विवाह प्रथा में इतने दोष आ गए हैं कि जिसका दुष्परिणाम स्त्रियों को भोगना पड़ रहा है जो प्राचीनकाल में नहीं था । बाल विवाह और अनमेल विवाह नहीं होते थे । कन्याओं को विवाह के समय अपने पति के चुनाव के संबंध में स्वयं अधिकार था, जो आजकल की तरह निन्दनीय नहीं माना जाता था । स्वयंवर होते थे । क्षत्रियों में गन्धर्व विवाह की प्रथा भी थी । यही कारण था कि उस समय भारत सब तरह शक्तिशाली और सब जातियों का अगुवा बना हुआ था और उसकी आंतरिक तथा बाह्य स्थिति सब प्रकार से सुदृढ़ थी ।

रामायण और महाभारत के समय तक स्त्रियों की स्थिति समाज में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

काफी उच्च थी । राजा जनक के दरबार में होने वाले याज्ञवल्क्य और गार्गी के शास्त्रार्थ का वर्णन पढ़कर ऐसा जान पड़ता है कि वह स्त्रियों की उन्नति का स्वर्ण काल था जबकि गार्गी की विद्वत्ता का यह एक सुदृढ़ प्रमाण है कि उसने दो प्रश्नों द्वारा याज्ञवल्क्य का मुकाबला किया और बड़े बड़े दिग्गज विद्वानों और ऋषियों से कह दिया कि "यदि याज्ञवल्क्य मेरे प्रश्नों का उत्तर दे सकें तो फिर तुम में से कोई इन्हें हरा न सकेगा ।" परिणाम यह हुआ कि उसके पश्चात् किसी ने याज्ञवल्क्य के सामने आने का साहस नहीं किया ।

महाभारत के पश्चात् देश पर विदेशी आक्रमण होने लगे । सामाजिक नियम बदल गए और कुरीतियां बढ़ चलीं, स्त्रियों को शिक्षा, विद्या, सामाजिक अधिकारों से वंचित रखा जाने लगा । वे पुरुषों के आश्रित पूर्णरूप से हो गईं । इस समय मुसलमानी शासनकाल था, जिसमें पर्दा की एक नई बुराई और पैदा हो गई जिससे स्त्रियां घर के अंदर लुंज-पुंज प्राणी की तरह दिन काटने लगीं ।

उन दिनों बाल विवाहों का आरंभ हुआ । शिक्षा के क्षेत्र में स्त्रियों की हीनावस्था ही है । लड़कों की शिक्षा की अपेक्षा लड़कियों की शिक्षा में संरक्षक उतनी रुचि नहीं रखते और कुछ व्यक्ति ध्यान देते भी हैं तो सोचते हैं कि जितनी उच्च शिक्षा दी जाएगी उतनी ही उसके विवाह की समस्या कठिन होती जाएगी । अब यदि लड़की बी. ए. पास है तो लड़का एम. ए. पास खोजना होगा, जो आजकल बहुत की मांग करते हैं । यही दहेज का अभिशाप पीछे पड़ा है । भारतवर्ष के इतिहास से प्रकट होता है कि इसके विकास का कारण यहां के नर नारियों के सम्मिलित उद्योग पर ही निर्भर था । उन्होंने विश्व के अन्य देशों के सामने भी ऐसा आदर्श उपस्थित किया, जिस पर चल कर वे उन्नति कर सकें और सब प्रकार की दुष्प्रवृत्तियों से बच सकें ।

प्राचीनकाल में देवताओं का वर्णन करते हुए उनकी देवियों का उनके समान ही शक्तिशाली वर्णन किया है । यथा ब्रह्मा, विष्णु, महेश के साथ लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा आदि देवियों को भी शक्ति का वास्तविक स्रोत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बतलाया गया है । अवतारों में राम–कृष्ण का नाम लेने के पहले उनकी पत्नी का नाम जोड़ देते हैं, यथा सीताराम, राधेश्याम आदि ।

पर खेद है कि अब उपर्युक्त परिस्थिति में बहुत अंतर आ गया है । स्त्री का स्थान पुरुष से पिछड़ा माना जाने लगा है । उसका व्यक्तित्व नष्ट हो गया और अब पुरुषों की छाया मात्र रह गई है । यों पिछले वर्षों इस स्थिति में कुछ परिवर्तन हुआ है और अनेक स्त्रियां उच्च शिक्षा प्राप्त कर ऊंचे ऊंचे पदों पर कार्यरत हैं, पर इनकी संख्या अंगुलियों पर गिनने लायक ही है, शेष का मुख्य कार्य परिवार के लिए रसोई बनाना और संतानोत्पादन ही रह गया है । ऐसी स्त्रियां दासता से छुटकारा नहीं पातीं और उन्हें अनेक अन्याय और अत्याचार सहने पड़ते हैं ।

इन बुराइयों का दुष्परिणाम केवल नारी को ही नहीं वरन् सारे समाज को भी भोगना पड़ता है । वे ज्ञान से शून्य रहती हैं । उसे कदम कदम पर ठगे जाने या विपत्ति आ जाने की शंका रहती है । पर्दाप्रथा रखी जाने से उसकी स्वतंत्रता में बाधा आती है और बाहर कहीं जाने पर उसके साथ पहरे की आवश्यकता पड़ती है । उस पर से विश्वास हट जाता है, पर यह एक अनैतिकता है । झूठा, चोर या दुष्कर्मी प्रायः दूसरों को इसी प्रकार का समझता है । नारियों को इस प्रकार हीनावस्था में पहुंचाने का परिणाम बड़ा दूरगामी हुआ है । इससे हमारा आधा राष्ट्र अकर्मण्य और कर्तव्य शून्य बन गया जिससे राष्ट्र को धक्का पहुंचा है ।

भारतवर्ष ही एक ऐसा देश है जो पतिव्रत पर विशेष जोर देता है । यदि स्त्रियों का आदर्श पतिव्रत धर्म है तो यह देखना आवश्यक है कि पुरुष पत्नीव्रती है या नहीं । ये एक दूसरे के पूरक हैं । एकाकी आत्म समर्पण संयम नहीं । राम के पत्नीव्रत के प्रभाव से सीता भी पतिव्रत पर ऐसी अटल अचल रहीं कि आज तक सतीत्व की रक्षा के लिए उनका उदाहरण दिया जाता है ।

सैकड़ों वर्षों की काली रात के पश्चात् अब हमारे देश में नव प्रभात का प्रकाश बिखरा और ये प्रयास हो रहे है कि शासन व्यवस्था अब स्त्रियों के हाथ सौंपी जावे, वे ही शांति स्थापित करने का कार्य करने में समर्थ हो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सकती हैं । महात्मा गांधी का वचन है कि "स्त्री साक्षात त्याग मूर्ति है । वह अबला नहीं है । जिस समय पाशविक शक्ति के अंध युग का अंत होगा और मनुष्य अपने आध्यात्मिक स्वरूप को अनुभव करके न्याय, नीति के आधार पर नए संस्कार का निर्माण करेगा, तब निश्चय नारी का प्रमुख स्थान रहेगा ।"

नारी का पिछड़ापन समाज के पतन का कारण

वास्तविकता यह है कि हमें यह मानकर चलना ही चाहिए कि नारी का महत्व नर से किसी प्रकार भी कम नहीं । गृहस्थ जीवन में नर को अधिक महत्व दिया जाना क्या इसलिए उपयुक्त और न्याय संगत कहा जा सकता है कि वह धन कमाता है और जीविकोपार्जन के साधन जुटाता है ? नहीं, महत्ता का यह आधार, यह तर्क उचित नहीं । यदि पुरुष बाहर जाकर परिश्रम करके धन कमाता है, जीविकोपार्जन के साधन जुटाता है तो नारी भी कम महत्वपूर्ण कार्य नहीं करती । वह उस धन और जीविकोपार्जन के जुटे साधनों की उचित व्यवस्था करती है । नर धन कमाकर नारी को सौंप निश्चिंत हो जाता है, यह नारी ही है, जो घर में उसके भोजन तथा आराम का प्रबंध करती है, उसे अपनी ओर से नवजीवन, नव स्फूर्ति तथा नवप्रेरणा प्रदान करती है ।

नारी का सहयोग, यदि प्राप्त न हो तो बाहर ये आठ दस घंटे के परिश्रम से चूर नर या तो चूल्हा–चौके के साथ माथापच्ची करे अथवा भूखा पड़ा रहे । उसे न आराम मिले न सुविधा । चार दिन में ही वह ऐसे नीरस और कठोर जीवन से लड़खड़ा जाए और भाग खड़ा होने की सोचने लगे । यह नारी ही है जो उसे लड़खड़ाने और भाग खड़ा होने से रोकती है और गृहस्थी के प्रति उसका आकर्षण बनाए रखती है । वह उसकी गृहस्थी बनाती है, चलाती है और सजाती है और पुरुष को इस ओर निश्चित किए रहती है । परिणाम स्वरूप गृहस्थी के प्रति नर का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आकर्षण बना रहता है, उसकी कटुताओं और कठोरताओं का उसे आभास भी नहीं होता ।

यदि हम नारी के एक दूसरे स्वरूप की ओर विचार करें तो हमें पता चलेगा कि नारी का यह स्वरूप तो पुरुष की अपेक्षा कहीं अधिक महान, कहीं अधिक महत्वपूर्ण है । यह स्वरूप है 'माता' का । नारी संतानों को जन्म देती है, वह संतान जो समाज, देश, राष्ट्र और विश्व के निर्माण का आधार है । इस संतति में ही विश्व क्रांति और जागृति निहित है । माता के रूप में कितना त्याग करती है, नौ मास तक अपार कष्ट सहन कर उसे गर्भ में धारण करती है, अपना रस और रक्त निचोड़ कर उसका निर्माण करती है बाद में दूध के रूप में अपनी रही सही जीवन शक्ति उस नवीन संतति को दे देती है । यह है उसका असीम त्याग, पुरुष तो अपनी वासना शांत कर अलग हो जाता है, जिसका भार नारी नौ मास ही क्या सारे जीवन ढोती रहती है । इससे स्पष्ट है कि संतान प्रजनन और उसकी रचना में जिसके आधार पर सृष्टि का क्रम चल रहा है, नारी का महत्वपूर्ण स्थान है । नर का स्थान तो इस संबंध में गौण एवं नगण्य है ।

यह नारी ही है जो संतति को केवल जन्म ही नहीं देती वरन् उसका पालन पोषण भी करती है । वह अपने रस रक्त का सार दूध उसे पिलाती है और पालती है । वह उसे बोलना सिखाती है, चलना सिखाती है और न जाने क्या क्या सिखाती है । वह स्वयं कष्ट सहन करती है, गीले में सोती है, रात–रात जागती है, भूखी रहती है, लेकिन वह अपनी नवोत्पन्न संतति को बढ़ते, फलते देख इन सब दुखों को भूल जाती है ।

नारी ही संतान का चरित्र निर्माण करती है । वह ही उन्हें इस योग्य बनाती है कि वे पैरों पर खड़ी हो सकें, नागरिक बन सकें, देश भक्त बन सकें । नर के लिए यह असंभव एवं असाध्य है । वह प्रातः जीविकोपार्जन के चक्कर में दफ्तर, कारखाने या व्यवसाय पर चला जाता है और बच्चों से बात नहीं कर पाता । सायंकाल हारा थका आता है तब तक बच्चे सो जाते हैं अथवा उसकी स्वयं की मनःस्थिति ऐसी नहीं होती जो बच्चों को दिशा दे सके । यह मां ही है जो प्रातः सायं घर की व्यवस्था भी करती है और दिन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में बच्चों को विभिन्न प्रकार शिक्षा दे उनका चारित्रिक निर्माण भी करती है ।

वस्तुतः नारी नर का महत्वपूर्ण पूरक अंग है । बिना नारी के नर पंगु है, असहाय है और कुछ प्रगति नहीं कर सकता, न भौतिक क्षेत्र में और न आध्यात्मिक क्षेत्र में । शिवाजी और गांधी की प्रगति के मूल बीज उनकी मां के ही बोए हुए थे । नेहरू और शास्त्री जी के प्रेरणा केन्द्र और उनकी पूरक यात्रा उनकी धर्म पत्नियां ही थीं । स्वतंत्रतता संग्राम का संचालन कर पुरुषों का सहयोग देने वाली लक्ष्मीबाई जैसी विदुषियां ही थीं । नर तो क्या, देवता भी नारी अंग बिना अपूर्ण हैं । यदि ये नारियां इनके रूप में न होतीं तो कदाचित उनके व्यक्तित्व और स्वरूप का वह निखरा हुआ स्वरूप हमारे सम्मुख न होता जो आज है, उनकी शक्ति और तेज में वह प्रखरता न होती जो आज है ।

नारी पुरुष की शक्ति का प्रेरणा स्रोत है, वस्तुतः वह पुरुष की शक्ति है । नारी को दुर्बलता का प्रतीक मानना, व्यक्ति की दुर्बलता मानना, उसका अपमान करना है । नारी का महत्व आदि काल से ही रहा है और अनंत काल तक रहेगा । देखा जाए तो वर्तमान युग में इसका महत्व और भी अधिक बढ़ गया है । आज सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, आध्यात्मिक, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में नारी ही वह धुरी है जिस पर समस्त प्रगति निर्भर है ।

यह धारणा सर्वथा भ्रममूलक है कि घर गृहस्थी अथवा नारी आध्यात्मिक मार्ग में बाधा है । यह धारणा उन्हीं लोगों की है जिन्होंने नारी के सच्चे स्वरूप को नहीं पहचाना है, जिन्होंने उसे केवल मात्र वासना पूर्ति का साधन और बच्चे उत्पन्न करने वाली मशीन बनाकर अपना और उसका जीवन पशुतुल्य एवं नारकीय बना दिया है । वासना पूर्ति की प्रतीक नारी, बच्चे पैदा करने वाली मशीन के रूप में नारी, अश्लीलता और नग्नता की प्रतिमा नारी, निसंदेह आध्यात्मिक मार्ग की बाधा है—बाधा ही क्या वह तो पतन की ओर ले जाने वाली शक्तिशाली सम्मोहिनी है—वास्तव में वह है नहीं हमने उसे बना दिया है, हमारे दृष्टिकोण ने उसे बना दिया । आज की स्थिति में नारी ने भी भूलवश उसी को अपना सच्चा स्वरूप

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समझ लिया है ।

यदि यह धारणा सच रही होती कि नारी वास्तव में ही आध्यात्मिक मार्ग में बाधा है तो प्राचीन ऋषि मुनियों ने उसे अपनाया न होता, वे सदा अविवाहित रहे होते और उन्होंने उसकी छाया को भी अपने पास फटकने न दिया होता । परंतु उन्होंने ऐसा नहीं किया । इससे स्पष्ट हो जाता है कि वह आध्यात्मिक मार्ग में बाधक नहीं रही हैं । सच तो यह है कि वह आध्यात्मिक मार्ग प्रशस्त करने में सहयोगी ही रही है जिसके कारण वासना मुक्त महापुरुषों ने भी उसे अपनाया और सहयोगी के रूप में अंगीकार किया । लगभग सभी ऋषियों के बाल–बच्चे भी आध्यात्मिक मार्ग में बाधा नहीं हैं । अनेक ऋषियों के पत्नियां रही हैं जिन्होंने अपने पति के आध्यात्मिक मार्ग को प्रशस्त किया । बाल बच्चे भी रहे हैं । सप्त ऋषियों को हम प्रधान मानते हैं, उनके पत्नियां भी थीं और बच्चे भी । वशिष्ठ, अत्रि, याज्ञवल्क्य, स्वयंभु, गौतम आदि ऋषि मुनियों की पत्नियाँ अरुन्धती, अनसुइया, मैत्रेयी, शतरूपा, अहिल्या आदि वनवास में उनके साथ रहीं, उन्हें सहयोग दिया और उनका मार्ग प्रशस्त किया । यदि वे साधना और तपस्या में बाधक होतीं तो ये ऋषि अपने साथ उन्हें क्यों रखते ? वे अपने योग में किस प्रकार कृतकृत्य और यशस्वी हो पाते ।

वास्तव में नर और नारी एक दूसरे के पूरक, सहयोगी और आध्यात्मिक मार्ग के सहायक हैं । उनका शारीरिक और मानसिक गठन ही इस प्रकार हुआ है कि वे एक दूसरे की अपूर्णताओं को पूर्ण करें और पारस्परिक सहयोग से सर्वांगीण व्यक्तित्व का निर्माण करें । पत्नी यदि अर्द्धांगिनी है, तो पति अर्द्धनारीश्वर, दोनों का सम्मिलित रूप ही एक पूर्ण इकाई बनाता है । आवश्यकता इस बात की है कि दोनों में सामंजस्य हो । यदि सामंजस्य न हुआ तो यह जीवन रूपी गाड़ी दो असमान पहियों पर चलने वाली गाड़ी के समान होगी जो चलेगी तो अवश्य परंतु लड़खड़ाते हुए, आवाज करते हुए । उसमें वह सुचारुता और गतिशीलता न होगी जो समानता और सामंजस्य के सहयोग से होती है ।

आज घर–घर में अशांति, अव्यवस्था, कलह, क्लेश का वातावरण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

फैला हुआ है । उसका मूल कारण यही है कि नर नारी में सामंजस्य का अभाव है । नर नारी एक दूसरे के प्रति अपने कर्तव्यों का ठीक ठीक पालन नहीं कर पा रहे हैं । भारतीय नारी तो पूर्ण रूपेण समर्पणशील है, वह पतिव्रता बनी रहना चाहती है, वह पति से अतिरिक्त अपना अस्तित्व नहीं समझती, वह उसी की प्रसन्नता में अपनी प्रसन्नता समझती है परंतु खेद का विषय है कि नर पक्ष की ओर से इसका उचित प्रत्युत्तर नहीं मिलता । नर उसके इस निश्छल आत्म समर्पण को उसका त्याग नहीं, इसकी विवशता, कर्तव्य और अपना अधिकार समझता है । यदि वह इस समर्पण को सही भावना से देखता और समझता तो कदाचित वह उसे अपनी वासना पूर्ति का ही साधन समझकर, इतना अधिक शोषण कर उसे नर कंकाल न बना डालता । उसने इस आत्मसमर्पण, इस त्याग और बलिदान की भावना के मर्म को समझा ही कहां ? वह तो उच्छृंखल और अत्याचारी होकर अन्याय ही करता गया, खून ही चूसता गया, परंतु यह स्थिति सदैव चलती नहीं रहेगी । अत्याचार, अन्याय और दुर्व्यवहार सहन करने की भी एक सीमा होती है, तिरस्कार भी एक सीमा तक सहन किया जा सकता है । उसके बाद प्रतिरोध, विस्फोट और संघर्ष स्वाभाविक है ।

जिस वर्ग में आशा, उत्साह और साहस का उभार होता है वही क्षेत्र में आगे बढ़ता है और सुसंपन्न बनता है । जिनमें भोग जन्य शिथिलता बढ़ती है उन्हें जीवन के हर क्षेत्र में पिछड़ना पड़ता है । इस तथ्य की अमेरिका के नर और नारी वर्ग की स्थिति का विश्लेषण करते हुए सहज ही समझा जा सकता है ।

अमेरिका जनगणना विभाग द्वारा प्रकाशित नई रिपोर्ट के अनुसार उस देश में महिलाओं की संख्या पुरुषों से अधिक है । वे शारीरिक दृष्टि से भी पुरुषों की अपेक्षा अधिक स्वस्थ और सबल हैं और औसत अमेरिकी महिला, वहां के पुरुषों की तुलना में ७ वर्ष अधिक जीवित रहती है ।

उस सुसंपन्न देश में स्वास्थ्य, सफलता, दीर्घ जीवन और संख्या की दृष्टि से महिलाएं पुरुषों से क्यों आगे बढ़ती चली जा रही हैं और पुरुष क्यों पिछड़ते जा रहे हैं, इसका कारण विचारकों ने यह बताया है कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अमरीकी पुरुष संपन्नता के बाहुल्य का उपयोग विलासिता की वृद्धि में करता चला जा रहा है, उसकी आकांक्षा मात्र यह है कि किस प्रकार वासना और विलासिता के साधन जुटाने और उनके उपभोग में निरत रहने का अधिक से अधिक अवसर प्राप्त करे । इसी घुड़दौड़ में पुरुष समाज का ध्यान केन्द्रित है । शिक्षा, आजीविका, सुशासन, सुविधा के प्रचुर साधन होने के कारण अब उन्हें जीवन के किसी क्षेत्र में बड़ा संघर्ष नहीं करना पड़ता । यह निश्चिन्तता उत्पन्न करती है और कोई बड़ा लक्ष्य सामने न रहने पर मनुष्य व्यसन और व्यभिचार में अधिकाधिक निमग्न होता चला जाता है । उस देश के पुरुषों की मनःस्थिति और क्रिया पद्धति का रुझान अब इसी दिशा में बढ़ता चला जा रहा है ।

प्रकृति का अकाट्य नियम सदा से यही रहा है कि पुरुषार्थी और संघर्षशील प्रगति करते हैं और विलासी गलते गिरते चले जाते हैं । इसी नियम के आधार पर उस देश के पुरुष क्रमशः अपना स्वास्थ्य, सौन्दर्य, दीर्घ जीवन, बल, पुरुषार्थ खोते चले जा रहे हैं । नारी को संतुष्ट करने योग्य काम शक्ति में भी ह्रास होने का रहस्योद्घाटन वहां की स्वास्थ्य अन्वेषी संस्थाओं ने किया है । उनका कहना है–मनः स्थिति पुरुषों की अधिक विचलित रहती है । जहां तक काम पुरुषार्थ का प्रश्न है, नारी की तुलना में नर की स्थिति क्रमशः दयनीय होती चली जा रही है ।

संसार के सभी क्षेत्रों में नारी पीड़ित और पददलित रही है । योरोप एवं अमेरिका भी इसके अपवाद नहीं हैं । शिक्षा और प्रगतिशीलता की बढ़ोत्तरी ने नारी को नर की समानता का अवसर दिया है । उसका पूरा लाभ वहां की महिलाएं उठा रही हैं । वे अधिक सुयोग्य, अधिक समर्थ बनने पर अपना ध्यान केन्द्रित किए हुए हैं । पुरुष के सहयोग का वे लाभ तो उठाती हैं पर उनका गुलाम बनने से सर्वथा इन्कार करती हैं । पुरुष का लक्ष्य भले ही विलासिता बन गया हो पर वहां की नारी ने प्रगतिशीलता पर ही अपनी महत्वाकांक्षाएं केन्द्रित की हैं और उसी आधार पर अपनी रीति नीति निर्धारित की है । यही कारण है कि उनके दृष्टिकोण के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनुरूप प्रकृति उनकी सहायता कर रही है और वे क्रमशः हर क्षेत्र में अग्रणी बनती चली जा रही हैं । शिक्षा, शिल्प, विज्ञान, स्वास्थ्य, साहस, प्रगति हर क्षेत्र में वे पुरुषों की तुलना में अधिक सफलता प्राप्त कर रही हैं । प्रतियोगिता के हर अवसर पर पुरुष की तुलना में उस देश की नारी की सफलता का प्रतिशत क्रमशः बढ़ता ही चला जा रहा है ।

जिन देशों में नारी को प्रगति के अवसर नहीं मिल रहे हैं और वह कड़े प्रतिबंधों के बीच बाधित जीवन जी रही है वहां स्वभावतः पुरुषों की स्थिति अच्छी और नारियों की गई गुजरी है । मध्य पूर्व के इस्लाम धर्मानुयायी अपनी स्त्रियों पर पर्दा बुर्का आदि तरह–तरह के प्रतिबंध लगाते रहे हैं । एक एक पुरुष द्वारा बहुत सी स्त्रियां हरम में रखना और उनकी आकांक्षाओं पर प्रतिबंध लगाए रहना उस क्षेत्र की परंपरा जैसी बन गई है । यही कारण है कि उन देशों में स्त्रियों का स्वास्थ्य अपेक्षाकृत गिरा हुआ है । मृत्यु दर उन्हीं की बढ़ी चढ़ी है । साथ ही महिलाओं की संख्या घटती और पुरुषों की बढ़ती जाती है । हर पुरुष को विवाह करने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है और गृहस्थी बसाने के लिए भारी जोड़ तोड़ मिलाने पड़ते हैं

भारत में महिलाओं की मृत्यु संख्या पुरुषों की तुलना में अधिक है । वे कमजोर भी अधिक पाई जाती हैं और बीमार भी अधिक पड़ती हैं । इसका कारण नारी को बाधित और प्रतिबंधित करने वाली सामाजिक कुरीतियां ही प्रमुख हैं । वे जब तक इसी रूप में बनी रहेंगी–स्वभावतः नारी को दयनीय स्थिति में ही पड़ा रहना पड़ेगा ।

अमेरिका का उदाहरण यह सिद्ध करता है कि प्रगतिशीलता ही सफलताओं की जननी है । प्रकृति उन्हीं को आगे बढ़ाती है जिनमें उत्साह, साहस और पुरुषार्थ का उभार उठता है और महत्वाकांक्षाएं बढ़ी चढ़ी होती हैं । अमेरिकी नारी ने अपने को इस कसौटी पर वहां के पुरुषों की तुलना में अधिक अग्रगामी सिद्ध किया है, फलस्वरूप उन्हें प्रकृति ने मुक्त हस्त से सहायता दी है और वे क्रमशः आगे ही बढ़ती चली जाती हैं ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अगले दिनों नारी द्वारा विश्व का नेतृत्व किए जाने की संभावना इसीलिए अधिक है कि पददलित वर्ग को अगले दिनों अनीति मूलक प्रतिबंधों से छुटकारा पाने का अवसर मिलने ही वाला है । ऐसी दशा में वे अपने को सुविकसित एवं सुयोग्य बनाने का प्रयत्न करेंगी । फलस्वरूप प्रकृति का पूर्ण सहयोग भी उन्हें मिलेगा और विश्व के नव निर्माण में अपनी महत्वंपूर्ण भूमिका संपादित करेंगी ।

पुरुष के हाथ में चिरकाल से सर्वतोमुखी शक्ति रही है । नारी का स्वत्व अपहरण करके भी उसी ने अपनी मुट्ठी में रखा है, पर उसका सदुपयोग नहीं किया वरन् अनीति मूलक रीति नीति ही अपनाई है । युद्ध, शोषण और उत्पीड़न में ही प्रायः उसका पुरुषार्थ नियोजित होता रहा है । प्रकृति को यह सहन नहीं । वह उसके हाथ से उतने समय के लिए सत्ता छीनने वाली है जब तक कि उसे वर्चस्व के सदुपयोग करने की बात समझ में न आ जाए ।

विश्व संतुलन नारी के पक्ष में जा रहा है । अमेरिका में बढ़ता हुआ नारी वर्चस्व, उस प्रभात कालीन सूर्योदय के समान है जिसका प्रकाश क्रमशः अधिक प्रखर और अधिक व्यापक ही होने वाला है । हम देखेंगे कि समस्त विश्व में नारी किस प्रकार पिछड़ेपन से अपना पीछा छुड़ा कर प्रगतिशील बनती है और स्वाभाविक महानता को विकसित करके किस प्रकार विश्व में प्रेम और न्याय का शासन स्थापित करने में योगदान करती है । पुरुष के लिए यह उदाहरण आत्म चिंतन करने और आत्मसुधार करने का अच्छा अवसर होगा ।

नर नारी का संतुलित समन्वय ही मानव जाति का भविष्य उज्ज्वल करेगा । असंतुलन दूर होना ही चाहिए । इसे प्रकृति किस प्रकार व्यवस्थित करने जा रही है इसका उभार हमें अमेरिका में देखना चाहिए । विश्व में उसी क्रम के विस्तार की आशा करनी चाहिए । पिछड़ता पुरुष भी आज नहीं तो कल आत्मग्लानि अनुभव करेगा और कुमार्गगामिता छोड़कर वह रीति नीति अपनाएगा जिसके आधार पर नर नारी दोनों ही भगवान की दाईं बाईं भुजा के रूप में पारस्परिक सहयोग और सद्भाव का परिचय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देते हुए सुखी समाज का सृजन कर सकें ।

प्रौढ़ शिक्षा के राष्ट्रीय बोर्ड ने जो आंकड़े प्रस्तुत किए हैं उनसे यह तथ्य उभर कर सामने आया है कि भारतीय महिलाओं में साक्षरता की गति बहुत मंद रही है । समता के मानवीय अधिकार की प्राप्ति और नारी मुक्ति आंदोलन की सफलता के मार्ग में यह धीमी गति बहुत बड़ी बाधा है । इस ओर पूरा ध्यान देने की आवश्यकता है ।

प्राप्त आंकड़े बतलाते हैं कि शिक्षा का प्रसार नगरों में ही अधिक हुआ है, गांवों में कम । महिलाओं में भी शिक्षा के प्रसार की गति नगरों में ही तेज रही है । गांवों की स्त्रियां तो आज भी बीसवीं सदी के दूसरे दशक में जी रही हैं । नारी साक्षरता की गति मंद होने का एक बहुत बड़ा कारण यह है कि गांवों में रहने वाले ८० प्रतिशत नागरिकों को शिक्षित बनाने की ओर समुचित ध्यान नहीं दिया गया ।

हमारे देश में शिक्षा प्रसार के साथ यह भयंकर विडंबना जुड़ी हुई रही है कि हमारे यहां स्कूली शिक्षा पर ही अधिक ध्यान दिया गया है, जबकि प्रौढ़ शिक्षा और प्रौढ़ साक्षरता की दिशा में जो प्रयास किए गए हैं वे प्राय: नगण्य से ही रहे हैं । सरकार ने भी अपना ध्यान बालकों, किशोरों और युवकों को शिक्षित बनाने की ओर सीमित रखा । प्रौढ़ साक्षरता की ओर न तो सरकार ने ही विशेष ध्यान दिया और न समाज सेवियों ने ही ।

स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में भी लड़कों को पढ़ाने में तो कुछ उत्साह दिखाई पड़ता है किंतु लड़कियों, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्र की लड़कियों को पढ़ाने में अभिभावकों को कोई विशेष उपयोगिता नजर नहीं आई । शहर में तो लड़कियों की पढ़ाई पर ध्यान दिया भी गया, पर गांवों में लड़कियों को पढ़ाना व्यर्थ ही समझा जाता रहा है । यही कारण है कि ग्रामीण महिलाओं में साक्षरता का प्रतिशत अत्यधिक न्यून रहा ।

आज हमारे देश में २० करोड़ से अधिक महिलाएं निरक्षर हैं । १५ से ४५ वर्ष की आयु वाली महिलाओं में तो यह निरक्षरता और भी अधिक है । शिक्षाविदों का अनुमान है कि इस निरक्षरता को समाप्त करने के लिए शिक्षा मंत्रालय को करोड़ों रुपया व्यय करना होगा । यह एक गंभीर और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विचारणीय तथ्य है । नियोजित ढंग से यदि यह रुपया व्यय किया जाए तो महिलाओं में साक्षरता शत प्रतिशत हो सकती है । ऐसा शिक्षा शास्त्रियों का मत है ।

शत–प्रतिशत न सही पर यह प्रयास किया जाना तो अति आवश्यक है कि साक्षरता में महिलाएं पुरुषों के बराबर रहें, उनसे पीछे तो न रहें । नारी मुक्ति और नारी प्रगति के लिए यह एक अनिवार्य शर्त है । नारी जागरण का कार्य करने वाले समाज सेवी कार्यकर्ताओं और विशेषकर पढ़ी लिखी महिलाओं को इस कार्य के लिए आगे आना चाहिए ।

मध्ययुग में नारी मात्र भोग की वस्तु बना दी गई थी । उस पर तरह तरह की वर्जनाएं थोपी गई थीं । वर्षों तक उन वर्जनाओं के घरों में आबद्ध रह कर नारी रूढ़िवादिता और आत्म हीनता के दल दल में कुछ ऐसी फंसी कि आज भी वह पुरुषों से पिछड़ती ही जा रही है, जबकि उसे समानता का वैधानिक अधिकार मिल चुका है । समाज सुधारकों ने इस ओर बड़ा काम किया है । सरकार ने भी उन्हें विशेष सुविधाएं प्रदान की हैं । प्रगति का सूरज उगा तो है, पर अभी तक रूढ़ियों का कुहासा पूरी तरह छटा नहीं है । इन रुढ़ियों और संकीर्णताओं से उसे मुक्ति पाने के लिए साक्षरता ही उसके प्रगति द्वार पर लगे तालों की सुनहरी कुंजी सिद्ध हो सकती है ।

पुरुष वर्ग का महिला साक्षरता के लिए प्रयास करना उनके हित में है । महिलाओं में शिक्षा की वृद्धि होगी और वे प्रगति करेंगी तो उनके साथ परिवार की सुख समृद्धि भी बढ़ेगी । माता पढ़ी लिखी होगी तो वह अपने बच्चों को कभी अनपढ़ नहीं रहने देगी । इस प्रकार महिलाओं में साक्षरता की वृद्धि के साथ पुरुषों में साक्षरता का प्रतिशत अपने आप बढ़ जाएगा ।

कितनी ही शिक्षित महिलाएं ऐसी हैं जिनके पास समय, साधन और क्षमताएं हैं । यदि वे इनका प्रयोग मात्र अपने लिए और परिवार के लिए न कर उनका कुछ अंश महिला साक्षरता की गति तेज करने में लगाएं तो निश्चित रूप से नारी जागरण आंदोलन को पर्याप्त बल मिल सकता है । आज की जागरूक और शिक्षित नारी को समय की यह पुकार सुननी ही चाहिए ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लोगों की यह पुरानी मान्यता है कि लड़कियां पढ़ लिख कर क्या करेंगी ? उन्हें तो चूल्हा चौका ही संभालना है । उनमें जमी हुई इस जड़ता को, इस भ्रांत धारणा को जड़ मूल से उखाड़ फेंकने की बहुत आवश्यकता है । स्पष्ट है कि प्रौढ़ शिक्षा के द्रुत प्रसार बल का शिक्षण पर सीधा प्रभाव पड़ता है । ग्रामों में प्रौढ़ शिक्षा प्रसार होता तो ये भ्रांत धारणाएं मिटतीं और नारी साक्षरता का प्रतिशत बढ़ता ।

सुप्रसिद्ध विचारक अरस्तू के इस कथन की सत्यता झुठलायी नहीं जा सकती कि नारी की उन्नति या अवनति पर ही समाज तथा राष्ट्र की उन्नति या अवनति निर्भर है ।

किसी भी देश या समाज सुधार के लिए नारी सुधार अति आवश्यक है और नारी सुधार के लिए नारी शिक्षा अनिवार्य है । आज हमारे देश के समक्ष जो अनगिनत समस्याएं पग पग पर छायी हुई हैं, उन्हें सुलझाने के लिए नारियों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहेगा ।

हमारे देश को आजादी मिले ५० वर्ष हो गए । फिर भी नारी साक्षरता के क्षेत्र में हमारी उन्नति संतोषजनक नहीं हुई है । जबकि उजवेकिस्तान को स्वतंत्र हुए ४१ वर्ष ही हुए हैं और उन्होंने अपने देश में निरक्षरता को १० वर्ष पूर्व ही समूल नष्ट कर दिया था । उनकी इस सफलता में सरकार का पूर्ण सहयोग तो रहा ही किंतु जन सहयोग भी कम नहीं रहा । वहां के किशोर और किशोरियों को अपने देशवासियों की निरक्षरता की इतनी टीस थी कि वे स्कूल के अतिरिक्त खाली समय का उपयोग निरक्षरों को पढ़ाने में करते थे और जो पढ़ लिखकर होशियार हो जाता वह दूसरों को पढ़ाने में लग जाता । इस प्रकार उनके पारस्परिक सहयोग का ही शुभ परिणाम है कि वे अपने देश से निरक्षरता को समाप्त कर सके । यदि वैसी पारस्परिक जन सहयोग की भावना हमारे देशवासियों में भी जाग जाए तो असंभव नहीं कि साक्षरता का प्रतिशत न बढ़े । यदि पारस्परिक प्रबल जन सहयोग के साथ सरकार का भी पूर्ण सहयोग प्राप्त होता रहे तो हमारे देश में भी निरक्षरता का समूल नाश होने में अधिक समय नहीं लगेगा ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नारियों के अशिक्षित होने से हमारे देश में कितनी ही समस्याएं उठ खड़ी हुई हैं । दहेज की प्रथा का विरोध वे नहीं कर सकतीं, स्वयं नारी जाति कन्या का जन्म देते ही उदास हो जाती है । क्या कारण है कि सास–बहू, देवरानी–जेठानी, ननद–भौजाइयों में पारिवारिक क्लेश होना घर में सामान्य बात हो गई है ? अशिक्षित स्त्री प्रायः पुरुष के हाथ की कठपुतली मात्र बन कर रह जाती है । समाज में विधवाओं तथा परित्यक्ताओं की दयनीय स्थिति का एक कारण उनका निरक्षर होना भी है ।

शिक्षित महिलाएं जो जाग चुकी हैं, वे सारी साक्षरता की गति बढ़ाने के लिए गांवों में प्रौढ़, अपराह्न पाठशालाएं खोलकर अपना योगदान दे सकती हैं ।

महिलाओं की पाठशाला का समय उनकी सुविधानुसार ही निर्धारित किया जाए । प्रायः सभी महिलाएं दोपहर तक अपने काम से निपट ही जाती हैं । उसके बाद का अर्थात् दो से चार बजे तक का समय वे सुविधापूर्वक निकाल सकेंगी । चार बजे के बाद पुनः शाम का कार्य आरंभ होने लग जाता है ।

ये पाठशालाएं खोलने के पूर्व प्रौढ़ महिलाओं में शिक्षा के प्रति अभिरुचि जगाना अनिवार्य है । प्रायः उनके मुख से यही सुनने को मिलेगा कि अब हमारी तो जिन्दगी ही बीत गई है–बूढ़े तोते क्या पढ़ेंगे ? इस मान्यता को मिटाना आवश्यक है ।

इस मान्यता को मिटाने के लिए जी तोड़ परिश्रम करना होगा । उन्हें शिक्षा के महत्व से परिचित कराना होगा, निरक्षरता से होने वाली हानियां बतानी होंगी, आदि अनेक प्रकार से उनके साथ माथापच्ची करनी होगी, समय देना होगा, ये कार्य कोई समाजसेवी स्वयंसेवक, सेविका, जिस निष्ठा व मनोयोग से कर सकते हैं, वेतन भोगी कर्मचारी नहीं ।

उनके शिक्षा क्रम में व्यावहारिक ज्ञान को अनिवार्य रूप से रखना होगा । ऐसा शिक्षा क्रम निर्धारित करना होगा जो जीवनोपयोगी सिद्ध हो । प्रत्यक्ष लाभ दिखाई देने वाले सुझाव तथा ज्ञान से महिलाएं खिंच खिंच कर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वयंमेव ही आने लगेंगी ।

उनके पाठ्यक्रम में सिलाई, कढ़ाई, दस्तकारी को सिखाने का कार्य, भोजन तथा रसोई के प्रत्येक कार्य की ऐसी तकनीक बताना, जिसमें समय कम लगे और पौष्टिक तत्व अधिक मिलें, घरेलू कार्यों संबंधी विशेष समय बचाने वाली विभिन्न प्रक्रियाओं को बताना, स्वास्थ्य संबंधी सामान्य जानकारियों से अवगत कराना, बच्चों के उचित पालन पोषण की जानकारी, पारिवारिक साधारण बीमारियां व उनके घरेलू उपचार की जानकारी आदि अनेक ऐसी महिलोपयोगी बातें हों जिनका सामान्य ज्ञान प्राप्त कर वे कितनी ही परेशानियों से बच सकती हैं ।

प्रौढ़ पाठशालाओं, अपराह्न पाठशालाओं की सफलता व्यक्ति के मनोयोग पर निर्भर करेगी कि उसने वह कार्य कितने मनोयोग से किया है । इन पाठशालाओं को वही महिला चला सकती है जिसके हृदय में महिलाओं की हीन दशा का दर्द होगा । इन्हें समाज सेवी महिलाएं ही कर सकेंगी–वेतन भोगी शिक्षिकाएं नहीं ।

शिक्षा प्रसार का कार्य पारिवारिक स्तर पर भी चलाया जा सकता है । यदि पति शिक्षित है तो वह अपनी पत्नी, मां, बाप, भाई बहिन सभी को शिक्षित सुसंसकृत बनाए और माता पिता को चाहिए कि वे पुत्र की शिक्षा से लाभान्वित हों । इस प्रकार पारिवारिक स्तर पर शिक्षा प्रसार बढ़ाने से भी निरक्षरता की समस्या बहुत हद तक हल हो सकती है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनचाही संतान का निर्माण गर्भावस्था में

मां के चिंतन एवं आचरण का गर्भस्थ शिशु पर गहरा प्रभाव पड़ता है, प्रायः पोषण आहार पर अधिक जोर दिया जाता है । समझा और समझाया यही जाता है कि भ्रूण में पल रहे नवजात शिशु के समुचित पोषण के लिए यह जरूरी है कि मां को पर्याप्त पोषण तत्व मिलता रहे । यह उचित है और आवश्यक भी । मां के उदर से भ्रूण अपने योग्य सीधी खुराक प्राप्त करता है । पोषण तत्व उचित परिमाण में मिलते रहने से भ्रूण का विकास समग्र रूप में होता रहता है । अस्तु आहार में उन तत्वों का समावेश करना चाहिए, पर इस तथ्य की भी उपेक्षा नहीं होनी चाहिए कि मां के उदर में पल रहा शिशु उसकी विचारणा से असाधारण रूप से प्रभावित होता है । भ्रूण की काया जितनी कोमल होती है उतनी ही संवदेनशील भी । गर्भिणी का भला बुरा चिंतन शिशु की संवदेनशील स्थिति पर तदनुरूप प्रभाव छोड़ता है । प्रकृति ही नहीं, ढल रही आकृति पर भी मां की मनःस्थिति का, उभरने वाले उतार चढ़ावों का, हर्ष या शोक का, मानसिक संवेगों का असर पड़ते देखा गया है ।

नवागन्तुक शिशु के विकास के लिए मां का अनुकूल आहार विहार जितना आवश्यक है उतना ही जरूरी यह भी है कि अभीष्ट स्तर का वातावरण दिया जाए । ऐसा वातावरण जो उसकी मनःस्थिति को सात्विक, पवित्र, प्रसन्नचित्त और प्रफुल्लित रखे । दृश्य, श्रव्य और पठनीय तीनों ही स्रोत श्रेष्ठ हों जो चिंतन को श्रेष्ठ अथवा निर्दिष्ट दिशा देने के लिए जिम्मेदार हैं । संतान का निर्माण वस्तुतः उसके पैदा होने के बाद नहीं, गर्भकाल से ही आरंभ हो जाता है और जन्म लेने तक नब्बे प्रतिशत पूरा हो जाता है । यह प्रक्रिया अदृश्य रूप से चलती है । टेपरिकार्डर आवाज को जैसे अंकित कर लेता है ठीक इसी प्रकार गर्भिणी के मन में, मस्तिष्क में उठने वाले विचार गर्भस्थ शिशु के संवेदनशील तन्तुओं को झकझोरते रहते हैं ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कितनी बार तो मनःसंवेग इतने प्रबल होते हैं कि उनकी गंभीर प्रतिक्रिया शिशु की काम संरचना पर पड़ती देखी गई है । वे आवेश स्थायी रूप से शिशु के शरीर पर विभिन्न प्रकार के चिह्नों के रूप में अंकित हो जाते हैं ।

एक अंग्रेज एक बार समुद्र यात्रा कर रहा था । साथ में गर्भवती पत्नी थी । किन्हीं कारणों से वह पत्नी पर अत्यधिक रुष्ट था । हत्या करने की नीयत से उसने पत्नी को धक्का दिया ताकि वह समुद्र में गिर पड़े । गिरते गिरते उस महिला के हाथ जहाज की जंजीर पड़ गई । किंतु तभी उसने पत्नी पर छुरे से वार किया जिससे उसकी अंगुलियां कट गईं और वह गहरे समुद्र में जा गिरी । दूसरी नाव के कुछ मल्लाहों ने महिला को डूबने से बचा लिया । बाद में उसे बच्चा हुआ । आश्चर्य यह है कि उस नवजात शिशु की भी तीनों अंगुलियां कटी हुई थीं । लंदन के अस्पताल में चिकित्सकों के समक्ष अध्ययन के लिए यह एक रोचक केस था । मनःचिकित्सकों की एक टोली ने महिला की मनःस्थिति की जांच पड़ताल शुरू की । अपने निष्कर्ष में उन्होंने बताया कि महिला भय से इतनी आक्रान्त थी कि उसके मन में निरंतर उस घटना के दृश्य उभरते रहे हैं जिनका प्रभाव स्थायी रूप से बच्चे के ऊपर भी पड़ा ।

आनुवांशिकी के नियमों को झुठलाती हुई एक घटना स्पेन के समाचार पत्रों में बहुचर्चित हुई । स्थायी रूप से स्पेन में निवास करने वाले एक अंग्रेज परिवार में एक स्त्री गर्भवती हुई । वह जिस कमरे में रहती थी उसमें अन्य चित्रों के साथ एक इथोपियन पुरुष का भी चित्र लगा हुआ था । वह चित्र स्त्री को बहुत प्रिय था । इतना सुन्दर और मोहक था कि वह उसे नित्य भावनापूर्वक देखा करती थी । दूसरे काम करते समय भी उसे चित्र का स्मरण बना रहता था । समय पर बच्चा जन्मा । सभी को देखकर भारी अचरज हुआ कि बच्चे की मुखाकृति तथा वर्ण इथोपियन युवक जैसा था । जबकि बच्चे के माता पिता दोनों ही अंग्रेज थे । मनोवैज्ञानिकों ने अध्ययन के उपरांत यह बताया कि गर्भवती महिला के निरंतर के चिंतन का ही वह परिणाम था जिससे शिशु की आकृति तक बदल गई ।

ब्राजील की एक लड़की का विवाह एक अंग्रेज से हुआ । लड़की का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रंग सांवला था, पर उसमें मोहकता अधिक थी । पति–पत्नी में घनिष्ठ प्रेम था, पर उनके कोई सन्तान नहीं हुई, कुछ दिनों बाद पत्नी मर गई । अंग्रेज ने दूसरी शादी कर ली, पर उसे पूर्व पत्नी की याद सदा बनी रहती थी, उसकी दूसरी पत्नी गौर वर्ण की थी । नव विवाहिता में भी वह पहली पत्नी की छवि का दर्शन करता था । थोड़े दिनों बाद दूसरी पत्नी से एक कन्या जन्मी जो रूप, लावण्य, वर्ण तथा मुखाकृति में ठीक पहली ब्राजीली पत्नी जैसी थी । कारणों की गहरी छानबीन की गई तो मालूम हुआ कि अंग्रेज के मस्तिष्क में पूर्व पत्नी की याद सदा बनी रहती थी । गर्भ धारणा में उसकी विचारणा का प्रभाव पड़ा ।

अमरीका से हाल में प्रकाशित हुई पुस्तक 'दि वर्ल्ड आफ दि अनबोर्न' में लेखिका लेनी स्वीटज ने उपरोक्त तथ्यों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा है कि मनुष्य की जिन्दगी का सबसे महत्वपूर्ण समय उसके जन्म के पूर्व का होता है । शिशु गर्भ में पूर्ण सचेत प्राणी होता है तथा उसका अवचेतन उस अवधि की स्मृतियों को भलीभांति सँजोए रहता है । माँ के संवेगों को तुरंत अपनी स्मृति रूप में समेट लेता है ।

अमरीका के ही जोहियों स्थित फेल्ज रिसर्च इन्स्टीट्यूट में 'सोरान्ज' नामक एक चिकित्सा शास्त्री एवं मनः चिकित्सक पिछले बीस वर्षों से मानव की गर्भावस्था से किशोरावस्था के विकास प्रक्रिया पर शोध कर रहें हैं। उनका निष्कर्ष है कि गर्भावस्था में जो महिलाएं चिन्तित अथवा भयभीत रहती हैं वे एक प्रकार से अनजानें में गर्भस्थ शिशु के साथ अन्याय करती हैं । अध्ययन के दौरान उन्होंने पाया कि दुखी और भयभीत महिलाओं के शिशु अन्य सामान्य महिलाओं के गर्भस्थ शिशुओं से अधिक तीव्र हलचल करतें हैं। जानने एवं विकसित होने पर प्रायः ऐसे शिशु अधिक असंतुलित, गुस्सैल एवं आक्रामक देखें गए । मनः चिकित्सक लेस्टर सोरान्ज का मत है कि अधिक तनाव की स्थिति शिशु के लिए अत्यंत घातक सिद्ध हो सकती है । सम्भावित दुष्प्रभाव का एक उदाहरण उन्होंने प्रस्तुत किया है । शरीर से पूर्ण स्वस्थ दीखने वाली अट्ठारह वर्षीय महिला ने एक बच्चे को जन्म दिया। बच्चा देखने में स्वस्थ लगता था । २४ घंटे तक शिशु

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और माँ को चिकित्सकों की विशेष देखरेख में रखा गया। अचानक बच्चे को तेज खून की उल्टियां होने लगीं । थोड़ी ही देर बाद उसने छटपटातें हुए दम तोड़ दिया। कोई कारण इस आकस्मिक घटना के नहीं मालूम पड़ रहे थे, घटना की पूरी जानकारी प्राप्त करने के लिए सर्व प्रथम बच्चे का पोस्टमार्टम कराया गया तो विदित हुआ कि बच्चे की आंत में तीन फोड़े थे । उल्लेखनीय है कि आंत में फोड़े प्रायः उन वयस्कों के होते हैं जो प्रायः अधिक चिन्तित, आवेश ग्रस्त रहते हैं । परीक्षणकर्ताओं की रुचि संबंधित कारणों को जानने में और भी बढ़ी । महिला से पूछताछ की गयी तो ज्ञात हुआ कि पति से उसकी अनवन रहती थी । गर्भावस्था के अन्तिम छः महिनों में वह अधिक तनाव से ग्रस्त रही । विशेषज्ञों ने निष्कर्ष निकाला कि गर्भावस्था में मन पर पड़ने वाले दबावों के कारण फोड़ा पैदा करने वाले विजातीय तत्व गर्भनाल से होकर शिशु के भीतर पहुंच गए ।

कहना न होगा कि गर्भावस्था शिशु के विकास की अत्यंत नाजुक अवधि है जिसमें गर्भवती को आहार–विहार ही नहीं अभीष्ट प्रकार का वातावरण भी चाहिए । ऐसा वातावरण जो स्नेह, प्यार,सद्भाव प्रफल्लुता उभारने वाले तत्वों से अनुप्राणित हो ।

फ्रांस के राजतंत्र की स्वेच्छाचारिता और निरंकुशता के विरुद्ध वहां की जनता ने सन्१७८९ ई० में आवाज उठाई । जनक्रांति हुई और कर्तव्य विमुख स्वार्थ लोलुप सम्राट को फांसी की सजा दी गयी । तदुपरान्त वहां के क्रांतिकारी नेताओं ने शासन सूत्र अपने हाथ में ले लिया। लेकिन स्थिति अभी निरापद नहीं हुई थी । आस पास के देशों और राज्यों में सत्तासीन राजाओं को फ्रांस का यह घटनाक्रम असह्य लगा। जनता की चेतना और शक्ति का आदर्श उदाहरण कहीं अपने देश की प्रजा को भी जागरूक न बना दे इसलिए उन्होंने जनतांत्रिक फ्रांस के दमन की सम्मिलित योजना बनायी ।

आसपास के सभी स्वेच्छाचारी शासकों ने मिलकर फ्रांस पर हमला बोल दिया । कुछ समय पूर्व हुई जनक्रांति के कारण फ्रांस अपनी सुरक्षा व्यवस्था को सशक्त बना भी नहीं पाया था कि इस अनपेक्षित आक्रमण का सामना करना पड़ा । सैनिकों ने गांववासियों और नगरवासियों पर पाशविक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अत्याचार किए । नागरिक विदेशी आक्रमण का मुकाबला करने के लिए घरों से बाहर निकल पड़े । देश भक्तों ने जीतेंगे या मरेंगे की शपथ ली और अपनी स्त्रियों को छोड़कर विदा हो गए ।

इधर सैनिकों ने गांव के गांव उजाड़ डाले । घरों की महिलाएं अपनी रक्षा के लिए जंगलों में भाग गयीं । इन भागी हुई औरतों में से ही कोसिका द्वीप की निवासिनी एक महिला गर्भवती भी थी । गर्भवती होने के कारण वह दूर जंगल में सुरक्षित स्थान तक पहुंच नहीं पायी । इसलिए समीपस्थ पहाड़ी इलाके में ही उसे शरण लेनी पड़ी । चारों ओर से तोपों तथा बंदूकों की गड़गड़ाहट, बंदूकों की आवाज और कदमताल करते सैनिकों की पद चाप सुनाई देती थी । दिन भर उसकी स्मृति इन्हीं दृश्यों से भरी रहती थी । वह कभी सोचती काश इन नर पिशाचों से बदला लेने के लिए वह भी हाथ में शस्त्रास्त्र लेकर मुकाबला कर सके । शरीर की विवशता और प्रतिरोध क्षमता के अभाव में वह अपनी इस इच्छा को मूर्त रूप तो नहीं दे सकी परंतु दिन रात हृदय में उमड़ने वाले भावों और संकल्पों ने गर्भस्थ शिशु को प्रभावित किया और जब बच्चे ने जन्म लिया तो गर्भकाल के संस्कार ही विकसित होकर उसके सम्पूर्ण जीवन और व्यक्तित्व पर छाए रहे ।

आसपास के वातावरण से गर्भकाल में प्रभावित होने वाला वह बालक नैपोलियन वोनापार्ट के नाम से विख्यात हुआ । इस साहसी वीर पुरुष का जीवन युद्ध और संघर्षों में ही बीता । लगातार दिन रात घोड़े की पीठ पर बैठे रहना और शत्रु का मुकाबला करते रहना उसके लिए सरल था । कहने का तात्पर्य यह था कि गर्भिणी की मनःस्थिति का शिशु पर असंदिग्ध रूप से प्रभाव पड़ता है ।

साहसी और वीर संतान के लिए माता को अपनी भाव भूमिका उस काल में इसी प्रकार की रखनी चाहिए । कहा जा सकता है कि वे परिस्थितियां तो सभी के लिए उपलब्ध और संभव नहीं हैं । मूल बात परिस्थितियों से संबंधित नहीं है, वह तो मनोभूमि की स्थिति और अंतर्वस्था का प्रभाव है जो शिशु को तदनुकूल व्यक्तित्व प्रदान करता है । परिस्थितियां मात्र सहायक होती हैं, आधार नहीं ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

फिर भी वातावरण के प्रभाव से इन्कार नहीं किया जा सकता । गर्भवती स्त्री जैसे वातावरण और परिस्थितियों में रहेगी, उनके संपर्क की प्रतिक्रिया अवश्यमेव तो होगी ही । इसलिए संसार भर के बुद्धिजीवियों तथा मनीषियों ने श्रेष्ठ संतति के लिए गर्भिणी की दिनचर्या से लेकर मनःस्थिति, भाव–भूमिका और हृदयावस्था की ओर विशेष ध्यान देने पर जोर दिया है ।

गर्भिणी के आसपास का वातावरण उसके स्वजन तथा परिवार के सदस्यों से ही विनिर्मित होता है । अच्छी संतान के लिए स्थान बदलने का किसी सुन्दर और रम्य प्राकृतिक छटाओं में रहने की बात न तो सुविधाजनक है और नहीं व्यावहारिक । घर के लोगों से दूर चले जाने पर शिशु के पलायनवादी या असामाजिक बनने की संभावना अधिक रहती है । इसलिए उचित यही है कि मां बनने जा रही स्त्री के निकट संपर्क में रहने वाले लोग ही ऐसा वातावरण निर्मित करें, जिसमें गर्भिणी प्रसन्न, उत्साहित, आदर्श और स्निग्ध स्वभाव की बनी रहे ।

शरीर पर विशेष भार पड़ने से उन दिनों महिलाएं विशेष संवेदनशील हो जाया करती हैं । वैसे भी स्त्रियां पुरुषों की अपेक्षा अधिक भावुक होती हैं । इसलिए परिजनों को उन दिनों विशेष रूप से यह सावधानी रखनी चाहिए कि गर्भवती स्त्री परिवार की समस्याओं, स्वजनों के संबंध तथा अन्य स्थित घटनाओं के कारण खिन्न न हो । इसके लिए यही किया जा सकता है कि ऐसी बातों की सूचना और चर्चा गर्भिणी से न की जाए, परंतु इससे भी अधिक ध्यान इस बात का रखना चाहिए कि अन्य स्रोतों द्वारा समस्याओं से अवगत होकर कहीं वह चिंतित तो नहीं रह रही है ।

प्रायः पड़ौस तथा परिवार की महिलाएं आदतन ऐसी चर्चाएं चलाती रहती हैं जिनसे गर्भिणी को भी अन्य लोगों की तरह घर की तथा बाहर की स्थिति का पता चल जाता है । भले ही वह उनकी चर्चा किसी से न चलाए लेकिन अंदर ही अंदर तो चिंतित और उद्विग्न बनी रहती है । इस दुष्प्रभाव से बचाने के लिए उनके पतियों को गृहिणी का अंतर टटोलते रहना चाहिए । औरतें तनिक भी सहानुभूति जताने या प्रेम स्नेह व्यक्त करने वाले के सामने शीघ्र ही खुल जाती हैं । सर्वाधिक निकट आत्मीय होने के कारण पति से तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वे और भी खुली होती हैं–इसलिए यह काम पति बड़ी अच्छी तरह आसानी से कर सकता है । घर के और भी सदस्य अपना पारिवारिक दायित्व समझकर इस दिशा में सचेष्ट रहें तो बड़ा ही अच्छा है ।

जीवन भर स्त्री को अपने पति का अनन्य प्रेम और सहयोग तो अपेक्षित है ही सही । यह क्रम सामान्य गति से चलता रहता है, परंतु उन दिनों जब गृहिणी मां बनने वाली होती है । पति के दुलार और प्रेम की आकांक्षा और अधिक जाग्रत होती है, लेकिन सामान्य घरों में पति को गर्भिणी की ओर से निष्पक्ष तथा उदासीन भी देखा गया है । इस काम में कुछ कारणों से पुरुष पत्नी पर इतना ध्यान नहीं देते, विपरीत वे नीरस व्यवहार भी करने लगते हैं । कारण चाहे जो भी हो, यह अनुचित है और गर्भिणी तथा भावी संतान के लिए परिणाम में अलाभप्रद ही रहते हैं ।

होना तो यह चाहिए कि पुरुष स्त्री को बातचीत और व्यवहार से प्रेम प्रदर्शन कर संतुष्ट रखने में ही अपने कर्तव्य की इति श्री न समझें, वरन् सामान्य काम–काज और गृह व्यवस्था में भी पत्नी का हाथ बंटाकर अपना दायित्व पूरा करे । किसी भी प्रकार का दुराव छिपाव न रखकर सभी कार्यों को परामर्श से संपन्न करें । उसकी आवश्यकताओं, रुचियों और इच्छाओं को पूरा करने, तृप्त रखने के लिए विशेष रूप से प्रयत्नशील रहे ।

गर्भवती के प्रति परिजनों को भी सहयोग और सहानुभूति से भरी व्यवहार नीति अपनानी चाहिए । घर की अन्य महिला सदस्याएं स्त्री स्वभाववश गर्भवती के प्रति ईर्ष्यालु हो सकती हैं । प्रयत्न यह किया जाए कि इस मनोभूमि की स्त्रियां भी अपने कलहपूर्ण दुर्व्यवहार को कम से कम उस अवधि के लिए तो पूर्णतया रोक दें । ससुराल में विशेष रूप से सास, बहू, ननद, भौजाई और देवरानी जिठानी के परस्पर संबंधों की खेदपूर्ण स्थिति इस काल में गंभीर रूप से हानिकारक होती है । संभवतया इन्हीं कारणों से ग्रामीण परिवारों में प्रथम प्रसव के समय बहू को मायके भेज देने का रिवाज हैं । मायके जैसी स्थिति ससुराल में ही बनाई जा सके तो भावी संतान परिवार के प्रति विशेष रूप से दायित्व और आत्मीयता अनुभव करने, निभाने वाली होगी ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रायः ऐसा देखा गया है कि गर्भवती के पास रहने वाली स्त्रियां प्रसव वेदना का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन करती हैं । इससे गर्भवती स्त्री प्रसव को नितांत अस्वाभाविक और स्वास्थ्य को चौपट कर देने वाली प्रक्रिया समझ लेती है । उसके मन में मातृत्व का उत्साह मर जाता है । कल्पित भय और प्रसव वेदना का अत्युक्तिपूर्ण वर्णन गर्भिणी को त्रस्त कर देता है । मानसिक बल टूटने के साथ संतान के पौरुष, शौर्य और बल विश्वासी बनने की संभावना भी इससे समाप्त होती है । इसलिए प्रयत्न यह किया जाना चाहिए कि गर्भवती स्त्री प्रसव को एक स्वाभाविक और आवश्यक मान सकने के लिए मानसिक रूप से तैयार रहे । वस्तुतः यह कोई काल्पनिक सिद्धांत है भी नहीं । सृष्टि के सभी प्राणी उसी सहजता से प्रसव कर अपने जीवन क्रम को शीघ्र ही व्यवस्थित कर लेते हैं । प्रसवोपरांत आई अशक्तता और क्षीण शरीर स्थिति में यदि यही वातावरण अधिकांश कारण माना जाए तो गलत नहीं होगा ।

गर्भवती के अभिभावकों का यह पवित्र कर्तव्य है कि वे होने वाले बच्चों के प्रति मां की ममता और औत्सुक्य जगाते रहने का प्रयास करें । बच्चों के छोटे छोटे कपड़े, ओढ़ने बिछाने की छोटी गद्दियों, गुदड़ी, गिलाफ, नैपकिन उसी के हाथों तैयार करवाए जाएं । प्रसूता के विशेष आहार का कूटना पीसना भी गर्भवती के ही हाथों से संपन्न हो तो भी वह उत्साह बना रहने में सहायता मिल सकती है ।

व्यवहार आत्मीयता पूर्ण तो रहे परंतु लाड़ दुलार की मात्रा सीमा भी न लांघ जाए–यह ध्यान भी अवश्य रखना चाहिए । मायके में अथवा बहू को बेटी मान समझकर रखने वाले परिवारों में गर्भिणी को बिल्कुल भी काम नहीं करने दिया जाता । आलसी विश्रांत स्थिति में ही गर्भवती स्त्री को रखते हुए भले ही दुलार लाड़ किया जा रहा है, परंतु यह लाड़ दुलार उसके हित में नहीं । दिन भर सोते रहने वाली स्त्रियों को असह्य प्रसव वेदना तो भोगनी ही पड़ती है, उनकी संतान भी आलसी और दीर्घ सूत्री निकलती है ।

गर्भवती स्त्री के अंग प्रत्यंग का समुचित रूप से श्रम होता रहे यह आवश्यक है । हो सके तो उसके लिए व्यायाम आदि की व्यवस्था भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करनी चाहिए । कम से कम प्रति प्रातः–सायं जो समय उपयुक्त रहे, घूमने टहलने का क्रम बनाया जाना चाहिए । शरीर श्रम से गर्भवती की ग्रन्थियां और पेशियां जहां स्वस्थ, स्फूर्त और मजबूत बनेंगी वहीं भावी जातक भी श्रमशील, शक्तिशाली, हृष्टपुष्ट और निरोग रहेगा ।

मां बनने का विशेष उत्तरदायित्व गर्भवती पर ही आता है । इसलिए भावी संतान के निर्माण में सर्वाधिक मनोयोग और प्रयत्न करना भी उसी के लिए आवश्यक है । परिजनों का व्यवहार, आसपास का वातावरण और पति का प्रेम प्रदर्शन ठीक प्रकार से होते रहने पर भी गर्भवती स्त्रियां स्वयं के प्रति सचेत न रहें तो लाभ नहीं होने का । स्वजन बांधव उसके सम्मुख प्रेरणादायी स्थितियां प्रस्तुत करें यह तो ठीक है परंतु रुचि तो गर्भवती को ही लेनी होगी । शास्त्रों, प्रेरक प्रसंगों, शुभ विचारों, उत्तम चरित्रों तथा मानवीय आदर्शों से संपुटित पुस्तकों, साहित्य, चित्रों और घटनाओं का चिंतन, मनन और अध्ययन चलता रहे तो समझना चाहिए कि समाज को एक सुयोग्य सदस्य, देश को एक अच्छा नागरिक देने की आधी मंजिल तै कर ली है ।

नारियाँ समाज निर्माण के लिए स्वयं आगे बढ़ें

सुप्रसिद्ध विचारक अरस्तू का कथन है–''नारी की उन्नति या अवनति पर ही राष्ट्र की उन्नति या अवनति निर्धारित है ।''

आज अपने देश में जो अनगिनत समस्याएं पग–पग पर छाई हुई हैं, उन्हें सुलझाने में देश की नारियां अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं । वस्तुतः किसी भी राष्ट्र के उत्थान का हेतु वहां की महिलाओं की त्याग तपश्चर्या ही होती है ।

आज जनसंख्या वृद्धि की समस्या सुरसा के मुख की भांति निरंतर बढ़ती जा रही है । न केवल परिवार के लिए अपितु समाज, राष्ट्र और विश्व के लिए भी यह एक भयंकर सिर दर्द बनी हुई है । निवास, महँगाई, बेरोजगारी आदि अनेकानेक समस्याओं का मूल कारण इन दिनों देश में खतरे के मूल बिन्दु तक पहुंची हुई जनसंख्या ही है । उद्योग–धंधे,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यापार, शिक्षा, सवारी आदि के साधन कितनें–कितने भी बढ़ाएं जाएं, आबादी जिस तेजी से बढ़ रही है, उसे देखते हुए वे कम ही पड़ते चले जाएंगे और दरिद्रता से लेकर अव्यवस्था तथा भ्रष्टाचार तक असंख्य समस्याएं बढ़ती और उलझती चली जाएंगी ।

महिलाएं यदि चाहें तो इस समस्या को आसानी से सुलझा सकती हैं, वे इस क्षेत्र में एक निर्वाचक भूमिका अदा कर सकती हैं । यदि परिवार नियोजन प्रगति न कर सका तो उसका दोष बहुत बड़ी सीमा तक उन पर ही है । उन्हें अपने पतियों को संयम सदाचार की ओर अग्रसर करना ही चाहिए । बार–बार प्रजनन से अनावश्यक कार्यों में शक्ति का क्षय करना न केवल साथी के साथ ही विश्वासघात है अपितु अपनी शक्ति सामर्थ्यों को भी नष्ट करना है । युग की मांग है कि जनसंख्या वृद्धि रोकने के लिए स्त्रियां उसी प्रकार तात्कालिक कदम उठाएं जिस प्रकार घर में आग लग जाने पर उठाए जाते हैं ।

परंतु इससे पूर्व यह आवश्यक है कि स्त्रियां स्वयं को रमणी, कामिनी और पुरुष की भोग्य सामग्री समझना छोड़ दें । परिवार, समाज और राष्ट्र के निर्माण में अपनी सत्ता, महत्ता की अनुभूति करें । दूसरे वे मातृत्व शब्द की गरिमा को समझें । आज की परिस्थितियों को देखते हुए बच्चे पर बच्चे उत्पन्न करते जाना कोई बुद्धि की निशानी नहीं है । कूकर–शूकर की भांति अंधाधुंध बच्चे पैदा करने में गौरव नहीं है । उसी का मातृत्व धन्य है जो राष्ट्र को भरत जैसा सुशासक दे पाए, अर्जुन जैसे योद्धा दे पाए, गांधी जैसे कर्णधार दे पाए । प्रत्येक स्त्री को यह संकल्प लेना चाहिए कि वह चाहे एक ही बच्चा उत्पन्न करेगी परंतु उसे ऐसा सद्‌गुणी, सुसंस्कारवान बनाएगी जो देश के लिए गौरव सिद्ध हो सके ।

आज सर्वत्र भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी फैली हुई दिखाई पड़ती है । पुरुष प्रायः कहता है कि हम भ्रष्टाचार करते हैं, धन कमाने में अनुचित साधनों का प्रयोग करते हैं, तो उसका कारण हमारी पत्नी, मां और बहिन हैं । बहिन के दहेज के लिए रुपए चाहिए । पत्नी को बहुमूल्य प्रसाधन सामग्री और गहनों की निरंतर मांग रहती है । वह इस प्रकार से निस्पृह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होकर बात करता है मानो उसे अपने लिए कुछ भी न चाहिए, जो भी वह करता है, अनुचित दबाव के कारण ।

यदि मां, बहिन और पत्नी चाहें तो भ्रष्टाचार को समूल नष्ट कर सकती हैं । जब वे अपने परिवारों को सुधारेंगी तो समाज निश्चित रूप से ही सुधर जाएगा । संकल्प करें कि आभूषण नहीं पहन सकेंगी, सिनेमा नहीं जा सकेंगी तो कोई हानि नहीं, परंतु घर में पाप का पैसा न आने देंगी । सत्य, ईमानदारी और न्याय की कमाई ही ग्रहण करेंगी । इसके लिए सत्याग्रह, आंदोलन और असहयोग जैसे हथियार काम में लाए जा सकते हैं ।

भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने में सबसे बड़ा हाथ है दहेज प्रथा का । मध्यम वर्गीय गृहस्थ को एक कन्या के विवाह में बहुत सा रुपया लगाना ही होता है । इस मंहगाई के जमाने में परिवार का भरण पोषण ही कठिनाई से होता है, तो वह इतना रुपया कैसे जुटाएं ? इसके लिए चोरी, रिश्वत, भ्रष्टाचार, ऋणादि सभी उचित अनुचित तरीके अपनाए जाते हैं । खून का घूंट पीकर तो तब रह जाना पड़ता है जब शिक्षित कन्याएं भी माता पिता के इस कार्य का विरोध नहीं करतीं । अपने तनिक से वैवाहिक सुख के लिए वे वर पक्ष द्वारा माता पिता पर किया जाने वाला अत्याचार चुपचाप सह लेती है । लगता है आज भारतीय नारी की चेतना सो गई है, लगता है आज उसका नारीत्व, उसका स्वाभिमान मर गया है, वह क्रीडनक मात्र बनी हुई है, तभी तो आवश्यक कूड़े–कबाड़े की भांति कुछ रुपए देकर उसे घर से बाहर निकलवा दिया जाता है और चुपचाप देखती रहती है, उसके विरुद्ध एक शब्द भी नहीं बोलती । क्यों नहीं वह सिंहनी की भांति तमक कर यह कह देती कि यदि ससम्मान बिना मोल भाव किए गृहलक्ष्मी की भांति उसका स्वागत किया जाएगा तो विवाह करेगी अन्यथा आजीवन कुमारी रहेगी । किसी भी कार्य के लिए, महदुद्देश्य के लिए बलिदान देना ही होता है । यदि कन्याएं यह साहस दिखाएं–अपने वैवाहिक सुखों को लात मारकर दृढ़ निश्चय पर अड़ी रहें तो एक न एक दिन पुरुष वर्ग स्वयं उनकी अभ्यर्थना करेगा । आवश्यकता ऐसी बहादुर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नारियों की है जो अपनी व्यक्तिगत सुख सुविधाओं को लात मारकर साहस का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत कर सकें ।

स्वार्थपरता और अहमन्यता की अब अति हो चली । पुरुष ने अपने पौरुष के मद में जो कुछ भी किया है, उसके नजारे सर्वत्र देखने को मिल रहे हैं । विज्ञान, उद्योग आदि क्षेत्रों में उसने भले ही उन्नति कर ली हो, परंतु भावक्षेत्र तो नितांत विकृत हो गया है । नीति–न्याय, सदाचार–सच्चरित्रता आज स्वप्न मात्र बनकर रह गए हैं । जब तक भाव क्षेत्र को सुधारा न जाएगा तब तक किसी भी दिशा में की गई उन्नति व्यर्थ सी ही है ।

भाव और चरित्र की दृष्टि से नारी वर्ग पुरुष से कहीं बहुत ऊंचा है । गांधी जी ने भी कहा है–"स्त्री और पुरुष में चरित्र की दृष्टि से स्त्री का आसन ज्यादा ऊंचा है क्योंकि आज भी वह त्याग, तपस्या, नम्रता, श्रद्धा और ज्ञान की मूर्ति है । पुरुष भले ही अहंकार पूर्वक यह मान ले कि स्त्री की अपेक्षा उसका ज्ञान अधिक ऊंचा है, लेकिन अक्सर उसकी स्वाभाविक सूझ पुरुष के इस ज्ञान से ज्यादा सिद्ध हुई है । राम के पहले सीता और कृष्ण के पहले राधा नाम का उल्लेख स्त्री चरित्र की प्रबलता का परिचायक है ।

हम बार बार कह चुके हैं कि नवयुग का नेतृत्व नारियां ही करेंगी । परंतु उससे पूर्व उन्हें अपनी पात्रता सिद्ध करनी है, अपनी शक्ति सामर्थ्यों का परिचय देना है । मजबूत कंधे ही भार वहन करने में समर्थ हो सकते है ।

यों अपने देश में ही ऐसी शिक्षित नारियों की संख्या बढ़ती ही जा रही है पर उनमें से कुछ ही ऐसी निकलती हैं जो अपने वर्ग की दयनीय दुर्दशा के लिए कसक अनुभव करें और उन्हें उठाने के लिए बहादुरों की जैसी चिंतन प्रक्रिया अपनाएं । विवाह की इच्छा स्वाभाविक है, पर अपने वर्ग की दुर्दशा मिटाने के लिए उस सुख को लात मार देना भी अस्वाभाविक नहीं है । काश, इनमें से कुछ के मन में अपने वर्ग के प्रति करुणा भरी टीस जग सकी होती तो निसंदेह वे सूखी रोटी खाकर अपने निरर्थक जीवन को नारी उत्कर्ष में लगाकर धन्य बन सकती थीं । कितनी ही विधवाएं–कितनी ही परित्यक्ताएं है जो अपने लिए भारभूत जीवन काट रहीं हैं । यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बहुमूल्य जीवन यदि महिला कल्याण के लिए नियोजित हो सके तो परिस्थितियां वैसी न होती—जैसी आज दीख रहीं हैं । कितनी ही सुसम्पन्न महिलाएं है जिनके घर प्रचुर सुविधा साधन हैं, नौकर हैं और जिन्हें बहुत सा समय यों ही व्यर्थ ही इधर उधर काटना होता है । उन्होंने शौकिया रूप में भी महिला मंगल का काम सँभाला होता तो अनेकों को इनका अनुकरण करने की प्रेरणा मिलती ।

विगत स्वंत्रता संग्राम को अभी अधिक दिन नहीं हुए हैं । हमने अपनी आंखों देखा कि भारतीय नारियों ने परिवार का मोह त्याग कर जेल की यातनाएं सहीं, पुलिस के निर्मम अत्याचारों को मूक होकर सहा और आवश्यकता पड़ने पर भारत माता हेतु अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया । हमें अच्छी तरह स्मरण है कि लोक नायक गांधी जी की एक आवाज पर महिलाएं घर से निकल कर धरना, विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार, असहयोग आन्दोलन, नमक बनाने और शराब बन्दी के अनेक कार्यक्रमों में पुरुषों के साथ कंधा से कंधा मिलाकर सहयोग देती थीं । जिन दिनों अधिकतर कार्यकर्ता जेल के सींखचों में बंद थे, महिलाओं ने संघर्ष के सूत्र को अपने कोमल हाथों में संभालकर विदेशी सरकार तथा भारतीय नेताओं को आश्चर्य में डाल दिया था ।

स्वतंत्रता के बाद महिलाओं ने विविध क्षेत्रों में आगे आकर अपने परिश्रम, लगन, दृढ़ इच्छा शक्ति और अटूट आत्म विश्वास के द्वारा यह सिद्ध कर दिया है वे अब किसी से पीछे नहीं हैं । यदि नर और नारी दोनों को समान सुविधाएं दी जाएं तो नारियां प्रगति की दौड़ में आगे निकल सकती हैं । पर इतने से ही हम संतोष कर चुप नहीं बैठ सकते । अभी भी देश में दो वर्ग हैं एक प्रगतिशील और दूसरा पिछड़े हुए लोगों का ।

गाड़ी के एक पहिए को, शरीर के एक अंग को क्षत विक्षत स्थिति में तो नहीं रखा जा सकता । देश की कोई योजना, युग निर्माण का कोई कार्यक्रम आधी जनसंख्या को छोड़कर नहीं बनाया जा सकता और न सफलता ही प्राप्त की जा सकती है । किसी भी देश की प्रगति और सभ्यता का सही अनुमान उस देश की महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्थिति से लगाया जा सकता है ।

अब बदली हुई परिस्थितियों में यह आवश्यक है कि आंतरिक मोर्चों पर नियुक्त नारी अपने उत्तरदायित्वों का निर्धारण ईमानदारी के साथ करें । यदि हम ध्यानपूर्वक देखें तो हमें पता चलेगा कि राष्ट्र निर्माण में नारी का योगदान उसके रसोईघर से प्रारंभ होता है । देश का बहुत बड़ा भाग खाद्य संकट से ग्रस्त है । ऐसे में अमीरी के झूंठे प्रदर्शन को त्यागकर गरीबों के कहे जाने वाले खाद्यान्न बाजरा, ज्वार, मक्का आदि को काम में लाएं । मंहगी सब्जियों, फलों तथा पकवानों के स्थान पर गाजर, पालक, मूली, बथुआ, आलू, मूंगफली, केला, नींबू, अमरूद, पपीता जैसे मौसमी और सस्ते फलों तथा सब्जियों का उपयोग कर सकते हैं । ये वस्तुएं स्वास्थ्यप्रद तो हैं ही साथ ही पैसों की बचत भी हो सकती है । महंगाई के समय में बढ़ते हुए भावों का रोना रोने से कोई लाभ नहीं हो सकता । हमें फिजूलखर्ची त्यागकर मितव्ययी बनने का आदर्श उपस्थित करना होगा । पुरुष धन कमाता है और उसको व्यय करने का उत्तरदायित्व तो गृह लक्ष्मी पर है । धन का सदुपयोग कर वह सीमित आय से ही परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति कर भविष्य के लिए बचत कर सकती है ।

गांव की स्त्रियां कृषि कार्यों में अपने पति को पूरा पूरा सहयोग देती हैं । शहर की स्त्रियों को चाहिए कि वे अपने घरों के अंदर ही थोड़ी जगह का सब्जी उत्पादन में उपयोग करें । बड़े बड़े शहरों में जगह का काफी अभाव रहता है फिर भी तुरैया, लौकी, सेम जैसी बेलों में लगने वाली सब्जियां आसानी से उगाई जा सकती हैं । लकड़ी की पेटियों तथा गमलों में पौधे उगाने की व्यवस्था करनी चाहिए । छोटे कस्बों में तो मकानों के आंगन इतने बड़े होते हैं कि उनमें इतनी सब्जी उगाई जा सकती है कि बाजार से लेने की आवश्यकता ही न पड़े । घर के काम काज से बचने वाला गंदा पानी पौधों को हरा भरा रख सकता है । कपड़े धोने, बर्तन मांजने के बाद का बचा पानी क्यारियों में डाल दिया करें अथवा एक ऐसी कच्ची नाली क्यारियों तक बना दी जाए तो अलग से पानी देने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धार्मिक, शारीरिक और राष्ट्रीय तीनों ही दृष्टियों से एक दिन का उपवास उपयोगी है । भूतपूर्व प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री ने देश में संकट के समय साप्ताहिक उपवास का महत्व सबके सामने रखा था ।

बच्चे राष्ट्र के निर्माता होते हैं । उनमें राष्ट्रीयता की भावना का विकास, अनुशासन और देश के प्रति समर्पण की भावना संस्कारवान माता के लालन–पालन से ही आती है । देश का भविष्य माताओं की गोद से बनता बिगड़ता है क्योंकि नई पीढ़ी उनसे जन्म लेकर उनकी गोद में बढ़ती और पनपती है । यदि बालकों को साहसी, चरित्रवान, ईमानदार, परिश्रमी तथा ईश्वर से डरने वाला बनाया जा सके तो समाज में व्याप्त अनीति और भ्रष्टाचार को समूल नष्ट किया जा सकता है । इसलिए नेपोलियन अच्छी संतानों के लिए अच्छी माताओं के महत्व पर जोर देता था । उसका कहना था कि "बच्चों का भविष्य निर्माण माताओं पर निर्भर करता है ।" भारत का इतिहास इस बात का साक्षी है कि यहां की माताओं ने अपने बच्चों के पूर्ण विकास में ही रुचि नहीं ली वरन् मानवता के प्रति प्रेम, देश भक्ति और त्याग की भावनाओं को कूट कूट कर भर दिया था । अतः नारी का यह प्रमुख दायित्व है कि वह अपने बच्चों का पालन पोषण स्वस्थ ढंग से करे और उनमें ऐसे गुणों को विकसित करे कि वे स्वस्थ, सशक्त और सचेतन नागरिक बन सकें ।

आज जबकि मध्यम और निम्न श्रेणी के परिवार आर्थिक जटिलताओं से गुजर रहे हैं तब सीमित परिवार की बात को भुलाया नहीं जा सकता । पांच अस्वस्थ, अविकसित और अशिक्षित बच्चों की अपेक्षा एक या दो स्वस्थ, प्रतिभा संपन्न और सुसंस्कारी बच्चे अच्छे हैं । हमारे परिवार में बच्चों की संख्या उतनी ही होनी चाहिए जितने पालन–पोषण, शिक्षा–दीक्षा तथा शारीरिक और मानसिक विकास के साधन जुटाए जा सकें । जनसंख्या की द्रुतगति से होने वाली वृद्धि से राजनीतिज्ञ, वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री और समाज सेवी सभी चिंतित है । कितनी ही बार तो एक के बाद दूसरे बच्चों के जन्म से माता का स्वास्थ्य खराब हो जाता है । उसका शरीर दुर्बल हो जाता है । वह बच्चों के पालन–पोषण तथा पारिवारिक कार्यों को संपन्न करने में अपने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को अक्षम अनुभव करने लगती है । ऐसी स्थिति में भी सीमित परिवार की बात प्रत्येक नारी के सम्मुख विचारणीय है ।

शिक्षित महिलाएं परिवार निर्माण और समाज निर्माण के विविध कार्यक्रमों में प्रत्यक्ष रूप से अपना योगदान दे सकती हैं । उन्हें अपनी शक्ति, प्रभाव तथा समय का उपयोग अशिक्षितों को साक्षर बनाने, अज्ञानियों को ज्ञान की किरणें प्रदान करने, बेरोजगारों को स्वावलंबन का पाठ पढ़ाने तथा सामाजिक कुरीतियों को नष्ट करने में करना चाहिए । शिक्षित नारियों को तो दोहरी भूमिका अदा करनी ही होगी । जो वृद्धाएं यह कहती हैं कि 'हमारी जिन्दगी कट गई अब बूढ़े तोते क्या राम नाम पढ़ेंगे ।'उनके बीच जाकर शिक्षा का महत्व बताना होगा । ये महिलाएं मध्याह्न में दो घंटे का एक विद्यालय चलाकर बच्चों के पालन–पोषण, स्वच्छता, सिलाई बुनाई और अनेक कुटीर उद्योगों का प्रशिक्षण देकर उन्हें शिक्षित ही नहीं आत्म निर्भर भी बना सकती हैं ।

नशाबंदी और मांसाहार के क्षेत्र में भी महिलाएं महत्वपूर्ण कार्य कर सकती हैं । जहां मनुष्यों के सारे बौद्धिक प्रयास निष्फल हो जाते हैं वहां नारी अपनी सहानुभूति, ममता और सहृदयता के द्वारा अपना कार्य पूर्ण कर लेती है । लाखों ऐसे परिवार हैं जिनमें मांस, मछली, अंडे, धूम्रपान और मदिरा आदि वस्तुओं का खुलकर प्रयोग किया जाता है । वहां पत्नी का सुमधुर व्यवहार और सत्याग्रह की भावना पति को ऐसे दुर्व्यसनों से छुटकारा दिला सकती है । एक विचारक ने कहा भी है 'मद्यनिषेध का कार्य बौद्धिक सुधार का नहीं वरन् संवेदना और सहानुभूति पूर्ण कार्य है ।'

आज छात्रों में बढ़ने वाली अनुशासनहीनता, राष्ट्रीय संपत्ति की तोड़ फोड़, बड़ों के प्रति उद्दण्डतापूर्ण व्यवहार, पाश्चात्य सभ्यता के प्रति विशेष आकर्षण जैसी अनेक बातें हैं जिन्हें समझदार माताएं पारिवारिक स्तर पर आसानी से दूर कर सकती हैं । वे अपने पुत्रों को सुविधाएं, प्रेम और धन आदि सब कुछ प्रदान करती हैं । वे उनकी गतिविधियों पर दृष्टि रखकर विवेकशीलता के साथ मार्गदर्शन दे सकती हैं ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महिलाएं सौन्दर्य प्रसाधन की विकृतियों से बचें

प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसका व्यक्तित्व प्रभावशाली हो । जो भी उसके निकट संपर्क में आए वह उससे प्रभावित, आकर्षित हुए बिना न रहे । इसके लिए उसकी क्षमताएं, व्यवहार, सद्गुण और सद्विचार ही वे अलंकरण हो सकते हैं जो उसके व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाते हैं, किंतु आजकल आधुनिकता के नाम पर लोग विशेषकर महिलाएं यह समझने लगी हैं कि व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाने के लिए शारीरिक सौन्दर्य प्रमुख होता है ।

शारीरिक सुन्दरता सबको नहीं मिलती । व्यक्तित्व को प्रभावशाली दिखाने में यदि शारीरिक सौन्दर्य आवश्यक होता तो ईश्वर सभी को वह प्रदान करता । उसने सभी को शरीर के आवश्यक अंग आंख, नाक, कान, हाथ, पैर दिए हैं । शारीरिक सौन्दर्य भी उतना ही आवश्यक होता तो वह सबको देता । सौ में से मुश्किल से एक दो व्यक्ति ऐसे मिलेंगे जो लूले लंगड़े या अंधे हों किंतु गौर वर्ण और चेहरे की सुन्दरता वाले सौ में से मुश्किल से दस पंद्रह व्यक्ति मिलेंगे । इससे स्पष्ट है कि त्वचा का रंग और चेहरे का सौन्दर्य व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाने के लिए बहुत आवश्यक नहीं है ।

महिलाएं आधुनिकता के नाम पर इस भ्रम जाल में फँस कर सौन्दर्य प्रसाधनों का उपयोग कर स्वयं को आकर्षक बनाने का प्रयास करती हैं । विवेक दृष्टि से देखा जाए तो उसे इस युग का एक अंध विश्वास ही कहा जाएगा ।

सौन्दर्य प्रसाधनों का प्रयोग किस गति से बढ़ चला है, इसका सहज अनुमान विश्व की महिलाओं का सौन्दर्य प्रसाधनों पर होने वाले व्यय द्वारा लगाया जा सकता है । ब्रिटेन की महिलाओं ने सौन्दर्य प्रसाधनों पर करोड़ों पौण्ड खर्च किए हैं । इस मामले में अमरीकी महिलाएं भी पीछे नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं । फ्रांस की महिलाएं सौन्दर्य प्रसाधनों पर अपनी आय का ५ प्रतिशत से १२ प्रतिशत तक खर्च कर देती हैं ।

हमारे देश में भी उनकी देखादेखी सौन्दर्य प्रसाधनों का उपयोग बढ़ता ही जा रहा है । आज शायद ही कोई देश बाकी बचा हो जहां इन साधनों का उपयोग न किया जाता हो ।

व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाने के लिए मात्र चेहरे की सुन्दरता व त्वचा का रंग ही पर्याप्त नहीं है । कोई स्त्री काली है तो वह अपने चेहरे पर सौन्दर्य प्रसाधन लेप कर गोरी नहीं बन जाती किंतु वह अपने गुणों के अभिवर्धन और व्यवहार को सुन्दर बनाने का प्रयास करे तो निश्चित रूप से अपने व्यक्तित्व को कहीं अधिक प्रभावशाली बनाकर सुन्दर स्त्रियों से बाजी मार सकती है । सुन्दर विचार और भव्य भाव, व्यक्ति को लोकप्रिय और प्रभावशाली बनाते हैं । आंतरिक सुन्दर भावों की अभिव्यक्ति प्रफुल्लित चेहरे द्वारा स्पष्ट झलकती रहे तो व्यक्तित्व की प्रभा छिटके बिना नहीं रहती ।

महिलाएं इसी अंध विश्वास के कारण कि सौन्दर्य प्रसाधनों के लेप से वे सुन्दर दीखने लगेंगी, चेहरे पर तरह तरह के लेप करके और भी हास्यास्पद बन जाती हैं और यह बनावटी रूप टिकता भी कितनी देर है । जरा सा हाथ लगे तो पाउडर पुछ जाए, जरा सा पसीना आ जाए तो चेहरे पर चित्रकारी दीखने लगे ।

शरीर का सौन्दर्य तो अस्थायी है जो बीमारी बुढ़ापे के साथ साथ बदलता रहता है । बुढ़ापे में पड़ी हुई झुर्रियां पाउडर की पर्तों में कहां तक छिप सकेंगी । इससे अच्छा यही होगा कि विभिन्न लेपों द्वारा चेहरे के स्वाभाविक सौन्दर्य को नष्ट न किया जाए ।

वस्तुतः सौन्दर्य है क्या ? सौन्दर्य की न कोई परिभाषा है न मापदण्ड । एक ही वस्तु कुछ व्यक्तियों के लिए सौन्दर्य की निशानी हो सकती है और कुछ के लिए वही कुरूप हो सकती है । चीन में छोटे पांव को शुभ माना जाता है जबकि हमारे देश में छोटे पांव होना अशुभ का सूचक माना जाता है । भारतीय लोग लंबी श्याम अलकावलि पसंद

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करते हैं तो पाश्चात्य देशों में भूरे, गर्दन तक कटे 'बाब्ड' बाल सुन्दर मानते हैं । अफ्रीका में काले रंग, जापान में चपटी नाक को कुरूप नहीं माना जाता जब कि हमारे देश में ये दोनों ही वस्तुएं कुरूपता की निशानी मानी जाती हैं ।

जब शारीरिक सौन्दर्य एक भ्रम जाल ही है तो फिर अपने आपको सुन्दर बनाने के लिए रोज रोज न मालूम कितने सौन्दर्य प्रसाधनों का उपयोग किया जाना अंध विश्वास नहीं तो और क्या है कि उनके प्रयोग से व्यक्तित्व में निखार आएगा । किंतु वास्तव में यदि व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाने का प्रयास किया जाए तो शारीरिक सौन्दर्य बढ़ाने की जरूरत ही न पड़े ।

आजकल 'पर्सनाल्टी' और व्यक्तित्व से पुरुषों के लिए प्रायः हृष्ट पुष्ट और रौबदार व्यक्तित्व और स्त्रियों के लिए सुन्दरता व शारीरिक गठन का ही अर्थ लगाया जाने लगा है । शरीर को प्रमुखता देने के कारण मेकअप का अंध विश्वास भी पाया जाता है । कहीं बाहर जाना हो तो घंटों दर्पण के सामने बैठकर चेहरे की लीपा–पोती करने, रंगरोगन, पाउडर आदि लेपने में कोई कोई महिलाएं तो घंटों लगा देती है । वस्त्रों के चुनाव से लेकर 'आईब्रो' की कमान तानते, वेश के साथ 'लिपिस्टिक' बिन्दी और नेल पालिश के रंग चुनने और त्वचा के टाइप की जानकारी देने वाले पत्र पत्रिकाओं के स्तंभ और 'कॉस्मेटिक्स' बनाने वाली बड़ी बड़ी फर्मों के आकर्षक विज्ञापन और भी सहायक होते हैं ।

इस मेकअप महा विज्ञान से आखिर लाभ क्या ? जितना समय इस लिपाई–पुताई में लगता है, आज के मंहगाई के जमाने में जहां खाने को तेल भी नसीब नहीं होता तो चेहरे पर लेपने के लिए फाउंडेशन क्रीम, लोशन, पाउडर, स्नो आदि पर कितना धन व्यय होता है, घण्टों आइने के समाने बैठ कर मेकअप में कितना श्रम फालतू जाता है, साथ ही साथ स्वास्थ्य का नाश भी कम नहीं होता । ये सब उपलब्धियां हानि की मदों में ही जाती हैं लाभ के नाम पर कुछ भी नहीं होता ।

अंग्रेजी कहावत है 'टाइम इज मनी' (समय धन है) पर हमारे यहां

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कहा जाता है समय अमूल्य है । इस अमूल्य समय को यदि मेकअप में न बिगाड़ कर व्यक्तित्व निर्माण में लगाया जाए तो यह असंभव नहीं कि व्यक्तित्व न बने । इसी समय को महिला ज्ञानार्जन कर अपनी क्षमताओं और योग्यता वृद्धि में लगाएं तो उनका व्यक्तित्व महत्वपूर्ण बन सकता है जिससे वे स्वयं तो लाभान्वित होंगी ही, परिवार, समाज तथा देश को भी कम लाभ नहीं होगा ।

यदि कोई बी. ए. हो तो इन घंटों में तैयारी करके वह एम. ए. कर सकती है । कोई चाहे तो अशिक्षित महिलाओं को पढ़ा सकती है, स्वयं कोई कुटीर उद्योग सीख कर अपने आस पास के गांवों में वैसा ही उद्योग चला सकती है, सिलाई, कताई, कसीदाकारी आदि अनेक ऐसे व्यवसाय हैं जिन्हें सिखाकर महिलाओं को आत्म निर्भर बनाया जा सकता है । आवश्यकता है उसके स्वयं के वास्तविक प्रयास की ।

सौन्दर्य प्रसाधनों के उपयोग से अमूल्य समय ही नष्ट होता हो ऐसी बात नहीं है । समय के साथ धन, श्रम व स्वास्थ्य हानि, ये चार हानियां होती हैं । समय के साथ श्रम अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है । इतना सब करने के लिए उन्हें श्रम तो करना ही पड़ता है, मेकअप स्वयंमेव ही नहीं हो जाता । फिर उन्हें खरीद कर भी लाना पड़ता है, वे चलकर नहीं आ जाते । समय और श्रम लगा देने के बावजूद भी सौन्दर्य प्रसाधन प्राप्त नहीं होते जब तक कि उनके लिए धन न खर्च किया जाए । यह कहां की अक्लमंदी है कि इस मंहगाई के युग में जहां बच्चों को तो पौष्टिक खाना दूध, घी आदि नहीं मिल पाता और इन मेकअप के साधनों की खरीद में धन व्यय किया जाए ।

अपना अमूल्य समय, श्रम और धन नष्ट करने के बदले मिलती है स्वास्थ्य हानि । चेहरे पर विभिन्न प्रकार के रंग रोगन लगाने से त्वचा के रोम, छिद्र बंद हो जाते हैं और चर्म रोगों की उत्पत्ति होने लगती है ।

समय, श्रम और अर्थ की कीमत पहचानने वाले अब्राहम लिंकन ने अपनी संपूर्ण निष्ठा व लगन से व्यक्तित्व के वास्तविक विकास का प्रयास किया तो वे एक सामान्य व्यक्ति से विश्व विख्यात हो गए । सिंक्लेयर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ल्यूइस, जो एक कुरूप लड़का था, वह अमेरिका में प्रथम नोबुल पुरस्कार विजेता साहित्यकार हुआ । जीजाबाई तथा राणा प्रताप की माताजी भी कोई रूपवती नहीं थीं किंतु वे अपना अमूल्य समय और श्रम छत्रपति शिवाजी तथा मेवाड़ केसरी महाराणा प्रताप के निर्माण में लगाकर इतिहास प्रसिद्ध हो गयीं ।

जहां तक शारीरिक सौन्दर्य का प्रश्न है वह भी स्वास्थ्य पर निर्भर है न कि सौन्दर्य प्रसाधनों पर । जो सुडौल है वह सुन्दर दीखेगा ही और एक बीमार व्यक्ति चाहे कितना ही गोरा हो उसके चेहरे पर मुर्दनी ही छायी रहेगी । अतः स्वास्थ्य सुधार की बात तो समझ में आती है, यथोचित आहार, संयम, व्यायाम द्वारा शरीर को सुन्दर सुपुष्ट बनाने की बात भी समझ में आती है पर ऊपर से रंग रोगन पोतने की कतई नहीं ।

यह वैज्ञानिक तथ्य है कि स्नान करने तथा तौलिए द्वारा रगड़ कर त्वचा की सफाई से रोम छिद्र खुल जाते हैं ताकि शरीर की गंदगी का पसीने के रूप में बाहर निकलना सहज हो जाए । स्वास्थ्य के लिए शुद्ध वायु और ताजी धूप इन्हीं रोम छिद्रों द्वारा शरीर में प्रवेश होती हैं । इन प्राकृतिक संपदाओं का उपयोग शरीर स्वयमेव ही सरलतापूर्वक करता रहता है । किंतु इन्हीं महत्वपूर्ण रोम कूपों को प्रसाधन लेपन से बंद कर देना कहां की बुद्धिमत्ता होगी जो अवैज्ञानिक और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है ।

पहले हमारे देश में कोई–कोई धनी व राजघराने की महिलाएं त्वचा के रंग से निखार के लिए उबटनों का प्रयोग करती थीं । वे उबटन आजकल के सौन्दर्य प्रसाधनों की तरह चेहरे और त्वचा पर पुते नहीं रहने दिए जाते थे उनका उपयोग त्वचा का मैल छुड़ाने के लिए होता था । उबटन के बाद स्नान करना अति आवश्यक होता था ताकि रोम छिद्र भली प्रकार साफ हो जाएं । आजकल विवाह शादियों के अवसर पर लगाया जाने वाला हल्दी का उबटन उसी प्रकार का है ।

सौन्दर्य प्रसाधनों का उपयोग करने वाली महिलाएं शायद इस ओर से अनभिज्ञ ही हैं कि इनके उपयोग से उन्हें कितनी स्वास्थ्य हानि, धन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हानि उठानी पड़ती है ।

आजकल प्रत्येक वस्तु में मिलावट होती है, यह किसी से छिपा नहीं है । किसी वस्तु का खालिस मिल पाना प्रायः असंभव सा हो गया है । फिर यह कैसे मान लिया जाए कि सौन्दर्य प्रसाधन में मिलावट नहीं होती होगी ।

आज के इस यांत्रिक युग में हर व्यापारी तथा हर कंपनी यही चाहती है कि उन्हें कम से कम लागत में अधिक से अधिक मुनाफा मिले । नित नए आकर्षक पैकिटों में उनके विज्ञापनों से पत्र पत्रिकाओं के पन्ने भरे रहते हैं । दीखने में वे सुन्दर लगते हैं किंतु उनमें ऐसे ऐसे घटिया किस्म के पदार्थ मिला देते हैं जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं ।

सुगंधित हेयर ऑयल की आजकल हजारों किस्में बन चुकी हैं और जिनका उपयोग अधिकांश व्यक्ति कर रहे हैं । उनका परिणाम भी छिपा नहीं रहा । पहले ७०–८० वर्ष की आयु के लोगों के ही सफेद बाल देखे जा सकते थे किंतु आजकल तो ८–१० वर्ष के बच्चे के सिर पर भी सफेद बाल मिल जाएंगे । युवा वर्ग में २५ प्रतिशत सफेद बाल वाले मिल जाएंगे । ३०–३५ की उम्र होते होते तो करीब करीब सभी के बाल सफेद होना प्रारंभ हो जाता है । ये सुगंधित तेल अधिकांश व्हाइट आयल पर बनते हैं । व्हाइट आयल होता है गंध उड़ा मिट्टी का तेल ।

इसके अतिरिक्त बालों के झड़ने, सिर में पित्ती, सिर दर्द, आंखों की जलन इत्यादि शिकायतें बढ़ती रहती हैं । इस सुगन्धित तेल तथा शैम्पू के प्रयोग से अंगुलियों में एक्जिमा हो जाता है । सिर धोते समय वह आंखों में गए बिना नहीं रहता और आंखों की जलन बढ़ जाती है जिससे आंखों को बहुत हानि होती है ।

खिजाब के प्रयोग से खोपड़ी की चमड़ी, कानों के आस पास की जगह तथा गरदन के पीछे फोड़े फुन्सी हो जाते हैं ।

नहाने के बढ़िया–बढ़िया आकर्षक साबुनों में बूढ़े, बीमार तथा मृत जानवरों की चर्बी मिलाई जाती है जिसके कारण खुजली आदि कई चर्म रोग पनपने लगते हैं । त्वचा की स्वाभाविक चमक नष्ट हो जाती है, चमड़ी खुश्क हो जाती है । साबुन में मिलायी जाने वाली हेक्साक्लोरोफिन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नामक कीटाणु नाशक औषधि के अधिक मात्रा में उपयोग होने से पिछले दिनों फ्रांस में ३९ शिशुओं की मृत्यु हो गई । अमेरिका में तो सन् १९६७ से औषधियों व शृंगार प्रसाधनों में इसका उपयोग बिल्कुल बंद कर दिया गया है ।

सौन्दर्य प्रसाधनों की सामग्री क्रीम व तेलों में लिनोलियम व मोम मिला देते हैं, जिसके कारण त्वचा के रोग उत्पन्न हो जाते हैं । चेहरे पर लगाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के पाउडरों में मेग्नीशियम कार्बोनेट, कैलशियम जिंकस्टीरेट, टिलैनियम आक्साइड आदि पदार्थ मिला दिए जाते हैं ।

चेहरे की रंगत का शेड देने के लिए जिन रंगों का उपयोग किया जाता है वे स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यंत ही हानिप्रद होते हैं । इन्हीं सौन्दर्य प्रसाधनों के उपयोग का परिणाम है कि मेकअप करने वाली महिलाओं के चेहरों का वास्तविक सौन्दर्य नष्ट हो जाता है । उन्हें नहाने के तुरंत बाद ही मेकअप करना होता है नहीं तो उनके चेहरे भद्दे लगते हैं ।

ईश्वर प्रदत्त सुन्दर आंखों को कृत्रिम सौन्दर्य देने के लिए उन्हें आवश्यकता से अधिक बड़ी, सुन्दर, तीखी और आकर्षक बनाने के लिए आई शैडो व आई लैंसों का उपयोग होता है । भौहों को काली गहरी बनाने के लिए वास्तविक भौहों व बरौनियों को काट कर सावधानी से रंगीन पैन्सिलों का बरौनियों को बनाने में उपयोग करती हैं । जिन्हें निर्दयतापूर्वक आंखों के निकट रगड़ती हैं । इनमें मिले रंगों से आंखों की विभिन्न बीमारियां रोहू, कजरी, ब्राइटिस आदि होने का भय रहता है ।

होठों के स्वाभाविक रंगों को अधिक सुर्ख बनाने के लिए जिन लिपस्टिकों का उपयोग किया जाता है उनमें आवश्यकता से अधिक सीसा और गोंद मिला दिया जाता है । जिसके कारण होठों की जलन, सूजन व फटने की शिकायतें पैदा हो जाती हैं ।

नाखूनों की पालिश में सिंथैटिक कलर व स्प्रिट मिलाई जाती है । परिणामतः नाखूनों में जलन, दर्द व न उगने का भय रहता है, अंगुलियों में घाव हो जाते हैं ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सौन्दर्य प्रसाधनों के उपयोग से समय, श्रम, धन और स्वास्थ्य की इतनी हानियां उठानी पड़ती हैं फिर भी महिलाएं उनका अंधाधुंध प्रयोग बढ़ाती ही रहें तो उसे अंध विश्वास नहीं तो और क्या कहा जा सकता है ।

जबकि पाश्चात्य देश की नारियां इन प्रसाधनों से बेजार हो चली हैं और वे अब 'विमेन लिव' आन्दोलन करती हुई अपने को 'फेयर सेक्स' नहीं कहलाना चाहती हैं । जिनके उपयोग से उन्होंने कोई लाभ होते नहीं देखा तो वे उसे छोड़ रही हैं, फिर भारतीय महिलाओं का ठोकर खाने से पूर्व ही संभल जाना ही श्रेष्ठ होगा ।

इन सौन्दर्य प्रसाधनों के बढ़ने एवं लोकप्रिय होने का अर्थ है अपने आपको स्वास्थ्य के नियमों की अनभिज्ञता, शिष्ट तथा शालीन परंपरा का अज्ञान ही दर्शाता है । जिन व्यक्तियों में विशेषकर महिलाओं में यदि थोड़ा सा विवेक है तो वे इन सौन्दर्य प्रसाधनों का बहिष्कार ही करेंगी ।

अश्लीलता के विष वृक्ष को पनपने न दें

गौहानिया एक प्रकार का कीट भक्षी पौधा होता है, जिसके पुष्प बहुत आकर्षक व सुन्दर होते हैं । कीड़े मकोड़े पुष्प की सुन्दरता को देखकर उस पर जा बैठते हैं । प्रकृति ने उसको इस प्रकार से बनाया है कि वे कीड़े पुष्प की तह तक चले जाते हैं और वे वहीं फंस जाते हैं । कारण कि उस पुष्प में ऐसे कांटे लगे होते हैं जो जीव जंतुओं को बाहर नहीं निकलने देते । बाजार में बिकने वाली गंदी तस्वीरें, फिल्में, रूप का आकर्षण और कामोद्दीपक शृंगार प्रसाधनों कें विज्ञापनों से उद्भूत अश्लीलता भी ऐसा ही कीट भक्षी पादप है, विषवृक्ष है जिसके कारण मनुष्यता अभिशप्त हो गई है ।

समाज में व्याप्त गंदगी, व्यभिचार, कामुकता और विलासिता का कारण अश्लीलता ही है । हम में उन्नति की सद्इच्छाएं न हों तो वातावरण से प्रभावित होकर हम इन्द्रिय तृप्ति के लिए लालायित बने ही रहते हैं ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रगति और विकास का क्रम अवरुद्ध हो जाता है । विवेक पथ भ्रष्ट और शिथिल बन जाता है ।

वातावरण में अश्लीलता उत्पन्न होने के अनेक कारण हैं । सिनेमा और कला का दुरुपयोग इनमें प्रधान कारण है । इसके माध्यम से बड़ें ही सुसभ्य तरीके से अश्लीलता का विष समाज में फैलता जा रहा है । 'कला विकास' का परिवेश देखकर समाज का नेतृत्व भी उसे स्वीकार कर लेता है । लेकिन इन साधनों से समाज का जो नैतिक पतन हुआ है, देश के लाखों युवक युवतियों की मनोवृत्ति दूषित हुई है और जानबूझकर इनके प्रति उपेक्षित दृष्टिकोण अपनाया जा रहा है ।

अश्लीलता का संक्रामक रोग मुख्यतया सिनेमा के कारण पनपा है । सैक्स को गोपनीय विषय मान लेने से मनुष्य का स्वाभाविक रुझान इसी ओर होता है । जिन सिद्धांतों को वर्जित और परित्याज्य समझा जाता है, मनुष्य स्वाभाविक रूप से उसी ओर प्रवृत्त होता है । फिल्म कंपनियों ने मानवीय स्वभाव की इसी कमजोरी को पकड़ा और उससे लाभ उठाया ।

जन साधारण के लिए सस्ते मनोरंजन के साधन न होने के कारण फिल्में ही मनोरंजन का एक मात्र साधन हैं । फिल्में भी ऐसे स्तर के लोगों की रुचि को ध्यान में रखकर बनाई जाती हैं । भारत में आवारागर्द, कामुक, निठल्ले, विधुर, अविवाहित या कालेज के छात्र ही ज्यादातर सिनेमा देखते हैं और उससे प्रभावित होते हैं । ऐसे अपरिपक्व अथवा अविकसित मानसिक स्तर के लोग काम वासना को उद्दीप्त करने वाले कथानक ज्यादा पसंद करते हैं । इन लोगों को थोथी और मिथ्या प्रेम लीला, निरर्थक संवाद तथा अश्लील हास्य प्रसंगों में बड़ा आनंद आता है ।

फिल्मों में चित्रित आदर्शों से प्रभावित होकर नवयुवक पथ भ्रष्ट हो जाते हैं । पर्दे का प्रेम यथार्थ जीवन में पाने के लिए भटकते रहते हैं । समाज में गंदगी फैलती है । चोरी, हत्या, व्यभिचार जैसे कुकृत्य होते रहते हैं । ऐसी बहुत सी घटनाएं देखने और पढ़ने में आई हैं कि सिनेमा में चोरी डाकों के दृश्य देखकर सभ्य और संपन्न घराने के युवकों ने वैसे ही अपराध किए और बाद में पकड़े जाने पर अपने ही जीवन से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खिलवाड़ हुआ ।

सिनेमा का कुप्रभाव अधिकांशतया नवयुवकों तथा कच्ची उम्र के किशोरों पर पड़ता है । यथार्थ जीवन के कठोर धरातल से अनभिज्ञ होने के कारण उनमें दूरदर्शिता तथा अनुभव जन्य विवेक का वैसे ही अभाव रहता है । रोमांटिक फिल्मों की पटकथा और व्यक्तित्व को वे वास्तविक मानने लगते हैं । फलतः जिस चीज से बचना चाहिए उसी की ओर आकृष्ट हो जाते हैं ।

सिनेमा के माध्यम से दर्शकों की रुचि भी इतनी विकृत हो गई है कि कभी कोई एकाध आदर्शवादी फिल्म बनाने का साहस भी कोई निर्माता करता है तो वह व्यापारिक दृष्टि से असफल और घाटे की बन जाती है । अपने आदर्शों पर दृढ़ रहने के लिए हर बार घाटा उठाना किसे पसंद आएगा । देवत्व कितना ही अच्छा क्यों न हो आसुरी शक्तियों की प्रबलता उसे परास्त कर ही देती है । एकाध फिल्म अच्छी भी बने तो उसकी तुलना में बनने वाली सैकड़ों अश्लील फिल्मों का प्रभाव ही ज्यादा पड़ेगा ।

अश्लीलता के बढ़ने का दूसरा बड़ा कारण हमारा अपना व्यवहार ही है । गाली–गलौज की दुष्प्रवृत्ति समाज में इतनी एकरस हो गई है कि छोटे बच्चे भी अपने से बड़ों के समान बेझिझक अपशब्दों का प्रयोग करते देखे जाते हैं । प्रत्येक गाली की जड़ में थोड़ी बहुत अश्लीलता छुपी रहती है । बात–बात में गाली देने के लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है उनकी अर्ध व्यंजना में मां, बहिन, पुत्री के साथ व्यभिचार या बलात्कार का भाव निहित होता है । जो मां हमारी है वह दूसरे भाई की भी है । इस विकार का बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है । जो शब्द हम उच्चारण करते हैं उसका असर सारे समाज पर पड़ता है । हमारा अपना अंतर्मन भी उसके प्रभाव से अछूता नहीं रहता । गाली के उच्चारण से वातावरण में गंदी तरंगें फैलती हैं । दूसरों के मस्तिष्कों से टकराकर उन्हें भी पतन के गर्त में ढकेलती हैं ।

क्रोध और लड़ाई–झगड़े में गाली का प्रयोग तो किया ही जाता है परंतु बहुत से लोग प्रेम प्रकट करते हुए भी गाली बकते हैं । व्याह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शादियों में, समधी–समधिनों के बीच–साले बहनोइयों के बीच ऐसे अपशब्दों का प्रयोग बहुत ही घृष्टतापूर्वक किया जाता है । ब्याह शादियों में प्रायः गंदे तथा अश्लील गीतों का प्रचलन है । ब्याह के समय समधियों का स्वागत प्रायः गालियां गाकर किया जाता है । ऐसी असंस्कृत परंपराएं भी अश्लीलता को बढ़ावा देती हैं । अपने मन की असंस्कृत स्थिति को प्रेम के रूप में व्यक्त करना कहां की सभ्यता है । प्रेम तो पवित्र है फिर उसकी अभिव्यक्ति अपवित्र कैसे हो सकती है । यह सब घोर नैतिक पतन का ही परिचायक है ।

गंदी तस्वीरें तथा नारी अंगों को चित्रित कर किए जाने वाले विज्ञापनों से भी समाज में अश्लीलता का विष फैलता है । बाजारों में, घरों में, दुकानों पर प्रायः भद्दे ढंग से सिनेमा की तस्वीरें बिकती और प्रचारित की जाती हैं । अभिनेताओं और अभिनेत्रियों के चित्रों का प्रचलन किसी भी राष्ट्रीय नेता अथवा महापुरुष के चित्रों से ज्यादा मात्रा में है । जो चित्र घर में रहता है, गुप्त रूप से उसमें निहित भावों से हम प्रेरित हुआ करते हैं । जिन घरों में सिनेमा देखने की प्रवृत्ति ज्यादा बढ़ी नहीं है, फिल्मी चित्र वहां ही लगाए जाते हैं । इन चित्रों का कुत्सित प्रभाव सामाजिक जीवन पर अनिवार्यतः पड़ता है ।

किसी भी व्यापारिक प्रतिष्ठान का नया उत्पादन लोकप्रिय बनाना हो तो उसके लिए भी स्त्रियों के चित्र के साथ विज्ञापित किया जाता है । निरे मूढ़ से लेकर सभ्य लोग भी ये विज्ञापन पढ़कर प्रभावित होते हैं ।

विज्ञापनों का यह अनैतिक प्रसारण समाज को अश्लीलता के गर्त में ही ढकेलता है । दूसरे आजकल सत्साहित्य की अपेक्षा उथले स्तर का साहित्य अधिक प्रकाशित होने लगा है । अश्लील पुस्तकें, कपोल कल्पित रोमांटिक उपन्यास तथा प्रेम कथाओं से बाजार भरे पड़े हैं । लोगों की मनोवृत्ति इतनी गिर चुकी है कि गंभीर विचारों की अपेक्षा कामुकता भरी सस्ती रोमांटिक कहानियां तथा वासना पूर्ति करने वाले सस्ते उपन्यास ही अधिक पसंद किए जाते हैं । ऐसा साहित्य बड़े आकर्षक रूप में प्रकाशित किया जाता है, मुख पृष्ठ पर अर्ध नग्न या नग्न नारी का चित्र, स्पष्ट अश्लील

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अर्थों वाला शीर्षक और विषय वस्तु में उत्तेजक रूप में वर्णित यौन संबंधों की घटनाएं । साहित्य कैसा भी हो, जन समाज पर अपना असर जरूर करता है । पुस्तकें एक प्रकार का प्रेरणाप्रद गुरु हैं, पथ प्रदर्शक हैं । जहां अच्छी पुस्तकें युवकों के समक्ष उत्तम और अनुकरणीय आदर्श रखकर उन्हें सन्मार्ग पर चलाती हैं वहीं अश्लील साहित्य उन्हें अनैतिक भी बनाता है ।

अश्लीलता का बढ़ता हुआ महारोग हमारे समाज के लिए बहुत बड़ी समस्या बन चुका है । इसका निवारण नहीं किया गया तो मानवता नष्ट हो जाएगी । आवश्यक है कि इस रोग से मुक्ति पाने के लिए रचनात्मक कदम उठाए जाएं ।

राष्ट्र के सामने अश्लीलता का चरित्र एक संकट के रूप में खड़ा है । इससे जूझने के लिए उसके मूल कारणों पर ध्यान केन्द्रित करना पड़ेगा । सिनेमा जन मानस के मनोरंजन का प्रधान साधन बन गया है । वस्तुतः इससे सस्ता और सहज सुलभ दूसरा हो भी नहीं सकता । समाज को अश्लीलता से बचाने के लिए आवश्यक है कि ऐसी फिल्मों का निर्माण रोका जाए ।

व्यापारिक दृष्टिकोण से निर्मातागण ऐसा साहसिक कदम उठा नहीं सकते । इसलिए हमें जन भावनाओं का परिष्कार करना पड़ेगा । लोगों को अपनी रुचि परिष्कृत करने के लिए प्रेरित किया जाए । एक सशक्त और समर्थ संघ शक्ति का निर्माण किया जाए जो ऐसी फिल्मों का प्रचलन रोके तथा दर्शकों को भी उससे होने वाली नैतिक तथा चारित्रिक हानियां के प्रति सचेत करे ।

अश्लील चित्रों की तुलना में प्रतिस्पर्द्धात्मक आदर्श और मर्यादित जीवन की प्रेरणा देने वाली फिल्मों का निर्माण किया जाए । कला के प्रति जब तक स्वस्थ दृष्टिकोण नहीं अपनाया जाएगा समाज में फैल रही अश्लीलता का कोई उपचार संभव नहीं है ।

हमें अपने व्यक्तिगत जीवन में भी सावधानी और जागरूकता बर्तनी पड़ेगी । बात बात पर गाली गलौज एक सामान्य आदत बन गई है । उसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिटाने के लिए प्रयत्न करने पड़ेंगे । जो लोग समझाने बुझाने पर भी नहीं मानते, उन्हें अपराधी श्रेणी का समझा जाए । मारपीट करना कानून और समाज सभी की दृष्टि में जैसे दंडनीय अपराध है वैसे ही गाली गलौज करना दण्डनीय अपराध मान लिया जाए तो यह दुष्प्रवृत्ति बहुत कुछ रुक सकती है ।

नारी के अश्लील चित्रों एवं उसे आधार बनाकर किए जा रहे विज्ञापनों के प्रचार प्रसार को रोकने के लिए भी पूर्वोक्त साधन अपनाए जा सकते हैं । जब तक इन दुष्प्रवृत्तियों को रोका नहीं जाएगा, अश्लीलता का विषवृक्ष फैलता रहेगा और एक न एक दिन बहुत भयंकर दुष्परिणाम हमें, हमारे परिवार और समाज को भुगतना पड़ेगा ।

अवांछनीय तत्वों से लोहा लिया जाए

कुछ दिनों पूर्व दिल्ली विश्वविद्यालय की छात्राओं ने दिल्ली नगर में बढ़ती हुई छेड़छाड़ की घटनाओं के विरोध में प्रदर्शन किया । यह केवल दिल्ली की ही बात नहीं है और केवल दिल्ली विश्वविद्यालय की छात्राओं की ही समस्या नहीं है वरन् सभी क्षेत्रों में महिलाओं और लड़कियों के साथ छेड़छाड़ की घटनाओं में जिस गति से वृद्धि हुई है उसे देखते हुए यह एक सामाजिक समस्या बनती जा रही है ।

पिछले पचास वर्षों में जो कुछ परिवर्तन हुए हैं उनमें नारी जाति की समानता के लिए बढ़ते हुए कदम प्रमुख हैं । अब वह घर की चहार दीवारी में बंद रहने वाली गृह स्वामिनी ही नहीं समाज के सक्रिय अर्धांग के रूप में विकसित होती जा रही है । पुरुषों से उनका संपर्क पहले की अपेक्षा अधिक होता है और यह संपर्क होना कोई बुरी बात नहीं है । स्त्री और पुरुष के बीच कोई विशेष असमानता नहीं होती फिर क्यों एक वर्ग घर में ही कैद बैठा रहे, किंतु लगता है नारी की प्रगति के समान ही समाज भी प्रगति नहीं कर सका है । छेड़खानी उसी पिछड़ेपन, असभ्यता और हीनता की निशानी है ।

बदलते युग में महिलाएं पुरुषों से उत्तरोत्तर आगे निकलती जा रही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है किंतु उनका सम्मान और सुरक्षा भी उतनी ही कम होती जा रही है । छेड़छाड़ की घटनाएं उसी असुरक्षा की द्योतक हैं । उनका यह कथन नगरों के संदर्भ में तो पूरी तरह सत्य उतरता है । दिल्ली नगर की वर्तमान स्थिति इसका सच्चा उदाहरण है । महानगरों की काम काजी महिलाओं का अपना शील सम्मान लगभग असुरक्षित ही लगता है किंतु ग्रामीण क्षेत्रों की स्थिति इससे भिन्न है ।

नगरों के अपराधी तत्व भरे बाजार में किसी सम्भ्रांत व्यक्ति की पगड़ी उछाल दें या किसी महिला के साथ अभद्र व्यवहार करें तो उसका प्रतिकार करने के लिए बहुत कम लोग आते हैं । क्योंकि वहां का जन जीवन ही कुछ ऐसा उदासीन और आत्म केन्द्रित हो गया है कि व्यक्ति अपनी अपनी ही दाढ़ी खुजाने में लगा रहता है । पिछले दिनों आजमगढ़ जिले के करीमुद्दीन गांव में छेड़खानी की घटना पर जो प्रतिक्रिया हुई वह उतनी ही जुगुप्सा पूर्ण और वीभत्स थी जितनी कि छेड़खानी की क्रिया । एक विवाहित ग्रामीण युवती अपने छोटे भाई के साथ ससुराल जा रही थी । मार्ग में स्थानीय कालेज के दो छात्रों ने उससे छेड़खानी की, यही नहीं शील हरण करने का प्रयास भी किया । इन कामान्ध युवकों का प्रतिरोध उसका नन्हा भाई नहीं कर सका । भयभीत युवती के मुंह से त्रासपूर्ण आर्तनाद फूट पड़ा । बधिक के हाथों पड़ी गौ का सा विवशता भरा यह स्वर सुनकर कुछ ग्रामीण व्यक्ति वहां आ पहुंचे और उन्होंने उन युवकों को पकड़ लिया ।

अच्छी बात का ढिंढोरा पीटने पर भी वह फैलती नहीं । किंतु बुरी बात तो हवा के घोड़े पर बैठकर उड़ती है । यह समाचार बिजली की तरह गांव में फैल गया और काफी भीड़ एकत्रित हो गई । शिक्षित युवकों के इस कुकर्म करने के दुस्साहस पूर्ण प्रयास पर लोग रोष से जल उठे । यही कल उनकी बहिन बेटी के साथ भी घट सकता है । दिन दहाड़े नारी की लाज लुटते देखकर भला कौन संयम रख सकता है और फिर भीड़ भरे उत्तेजित माहौल में तो यह और भी कठिन हो जाता है । क्रिया की प्रतिक्रिया आरंभ हो गई । पहले तो उनकी जी भर कर पिटाई हुई ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिसके हाथ जो लगा उसी से उन्हें पीटा गया अंत में उन्हें जीवित जला दिया गया । यह दण्ड विधान निश्चय ही अमानुषिक, जंगली व घृणास्पद कहा जा सकता है किंतु आरंभ के संदर्भ में अंत कुछ विशेष असंगत भी नहीं लगता ।

नारी को कुदृष्टि से देखने की जो प्रवृत्ति इन दिनों बढ़ रही है उसके मूल में कोई एक कारण अधनंगा फैशन नहीं है । पाश्चात्य भोगवाद का प्रभाव, नैतिक शिक्षा का अभाव, अधूरी एकांकी शिक्षा, धार्मिक आदर्शों की उपेक्षा, बढ़ती हुई अनैतिकता, अश्लील व कुत्सित सिनेमा, गंदा बाजारू साहित्य, गंदे कामुकता भड़काने वाले चित्र, भारतीय सभ्यता संस्कृति की उपेक्षा, आहार–विहार का असंयम अनेकानेक ऐसे ही कारण हैं ।

आए दिन समाचार पत्रों के पृष्ठ नगरों में बढ़ती हुई नारी अपमान व असुरता के संबंध में रंगे रहते हैं । ऐसे ऐसे लज्जाजनक काण्ड सामने आते हैं कि शर्म से हमारी गर्दन झुक जाती है । यही वह धरती है जहां नारी को देवी मानकर पूजा की जाती थी, वहीं यह सब घटित हो रहा है । नगरों में कहीं कहीं तो स्थिति यह हो गई है कि महिलाओं का देर सबेर निकलना खतरे से खाली नहीं होता । लड़कियों व महिलाओं के छेड़ने की घटनाएं आम होने लगीं हैं । लुटने का भय अब जन शून्य प्रदेशों व गांवों की अपेक्षा नगरों में अधिक हो गया है । यह लज्जा का ही विषय कहा जाएगा ।

नारी के शील सम्मान की बढ़ती हुई असुरक्षा का दोषी पुरुष वर्ग तो है ही पर कुछ अंशों में महिलाओं की फैशन परस्ती और अपने आपको आकर्षक दिखाने की भ्रामक प्रवृत्ति भी छेड़छाड़ को प्रोत्साहन देती है । महात्मा गांधी से कालेज में पढ़ने वाली छात्राओं ने जब लड़कों द्वारा छेड़खानी किए जाने की शिकायत की थी तो उन्होंने लड़कियों को राय दी थी कि वे अपने केशों का मुण्डन करवा लें फिर कोई उन्हें नहीं छेड़ेगा ।

उर्दू के प्रसिद्ध कवि अकबर ने भी अपने एक शेर में छेड़खानी करने की उच्छृंखलता को भड़काने वाले वेश विन्यास पर व्यंग्य कसा था– "मुझको सब कहते हैं रख नीचे नजर अपनी, कोई उनको नहीं कहता कि निकलो न यूं अयां (नग्न) होकर ।" आज की फैशन परस्ती, चुस्त

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिधान पहनने और अपने आपको आकर्षक दिखाने की होड़ करते समय आधुनिकाएं यह क्यों भूल जाती हैं कि उनका यह आकर्षक बनना उन्हीं के जी का जंजाल बन जाएगा ।

यह मानना पड़ेगा कि मनुष्य ने पिछले वर्षों में प्रगति की है पर उसकी प्रगति लंगड़ी है, एकांकी है । हमारे देश में शिक्षा का प्रसार तो हुआ है । लोगों की भौतिक प्रगति तो हुई है किंतु शिक्षा के साथ सद्बुद्धि–सद्ज्ञान का प्रसार नहीं हुआ । भौतिक प्रगति तो हुई है पर आत्मिक प्रगति में मनुष्य पिछड़ा ही रहा । आधुनिकता का अर्थ भारतवासियों ने मात्र पश्चिमी देशों की नकल करना भर समझ लिया है । क्या पुरुष क्या नारी दोनों ही यह भूल करने में एक दूसरे से पीछे नहीं रहे हैं । हमारी प्राचीन सभ्यता, संस्कृति और परंपराओं में वे तत्व हैं जो मनुष्य को मनुष्य से देवता बनाने में समर्थ है । वे रूढ़ियों के रूप में ही सही पर हमें मनुष्यता की परिधि में बांधे हुए थे ।

हमारे यहां अपनी आयु से बड़ी महिला को माता और अपनी से छोटी को बहिन मानने की मर्यादाएं थीं । नारी को देवी माना जाता था । स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने अपने उपदेशों में कहा है कि नारी चाहे वह कैसी भी हो उसे माता त्रिगुणमयी के रूप में मानना चाहिए । नारी के साथ इन भावनाओं को जोड़ने के कारण वहां आकर्षण नहीं श्रद्धा के भाव उमड़ते थे । उन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुए प्राचीन मनीषियों ने नारी को देवी की संज्ञा दी थी । पर दारेषु मातृवत् का आदर्श रखने का भारतीय आदर्श नारी के शील सम्मान का रक्षा कवच बना हुआ था । कोई व्यक्ति अपनी माता और बहिन को कुदृष्टि से देखने की धृष्टता स्वप्न में भी नहीं कर सकता । इन मर्यादाओं में बंधकर पुरुष वर्ग नारी के प्रति सम्मानजनक दृष्टिकोण ही अपनाता था ।

पिछले दिनों मुद्रण, प्रकाशन, सिनेमा, चित्र प्रकाशन, विज्ञापन आदि में प्रायः नारी के उसी स्वरूप को सामने रखा गया जो पुरुष की पशु प्रवृत्तियों को, काम वासना को भड़काए । साहित्य और कला की शक्तियों को भी इसी विनाश के पथ में प्रयुक्त किया गया । क्योंकि हमारे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सांस्कृतिक और धार्मिक आदर्शों को भुलाकर हम पाश्चात्य सभ्यता की अंधाधुंध नकल करने में लग गए ।

अमेरिका भौतिक प्रगति में ही सब देशों से बढ़ा चढ़ा नहीं, हत्या, लूटपाट, अपराध, शीलभंग, छेड़छाड़, अपहरण आदि में भी वह सबसे आगे है । वहां की महिलाएं पुरुषों से त्रस्त हो चली हैं । शारीरिक आकर्षण को ही प्रमुखता देने और उन्मुक्त भोग में विश्वास करने का कुपरिणाम भोगने के पश्चात् वहां की समझदार महिलाओं ने नारी शालीनता की आवश्यकता और महत्व को अनुभव किया है । अब वहां के वेश विन्यास में फिर परिवर्तन होने लगा है और बहुसंख्यक महिलाएं अधनंगी पोशाक को त्यागकर लज्जा का ठीक ढंग से निवारण करने वाले वस्त्रों का उपयोग करने लगी हैं ।

भारतीय महिलाओं को इस संबंध में अभी से सावधान हो जाना चाहिए । अभी तो यह हवा शहरों में ही बहने लगी है और एक वर्ग विशेष की नई स्त्रियां मर्यादा से आगे कदम बढ़ाने लगी हैं । ऐसे अवसर पर यहां की प्रबुद्ध महिलाओं का कर्तव्य है कि स्पष्ट रूप से युवतियों के अनुचित वेश विन्यास की भर्त्सना करें और इससे होने वाले कुपरिणामों की ओर से उन्हें सावधान करें । जब नारियां शील संयम का उचित रूप में पालन करने लगेंगी तो प्रथम तो नीच प्रकृति के लोगों को उनसे छेड़खानी करने का साहस ही नहीं होगा और जो दुष्ट तथा गुण्डा प्रकृति के लोग ऐसा दुस्साहस करेंगे तो समाज के सत् पुरुष और न्याय नीति पर विश्वास रखने वाले सभी व्यक्ति उनका तिरस्कार करने और दण्डित कराने में सहयोग देंगे ।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org